अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

Ability Enhancement Compulsory Course
Master of Arts Hindi Language and Literature

M23HD01AC

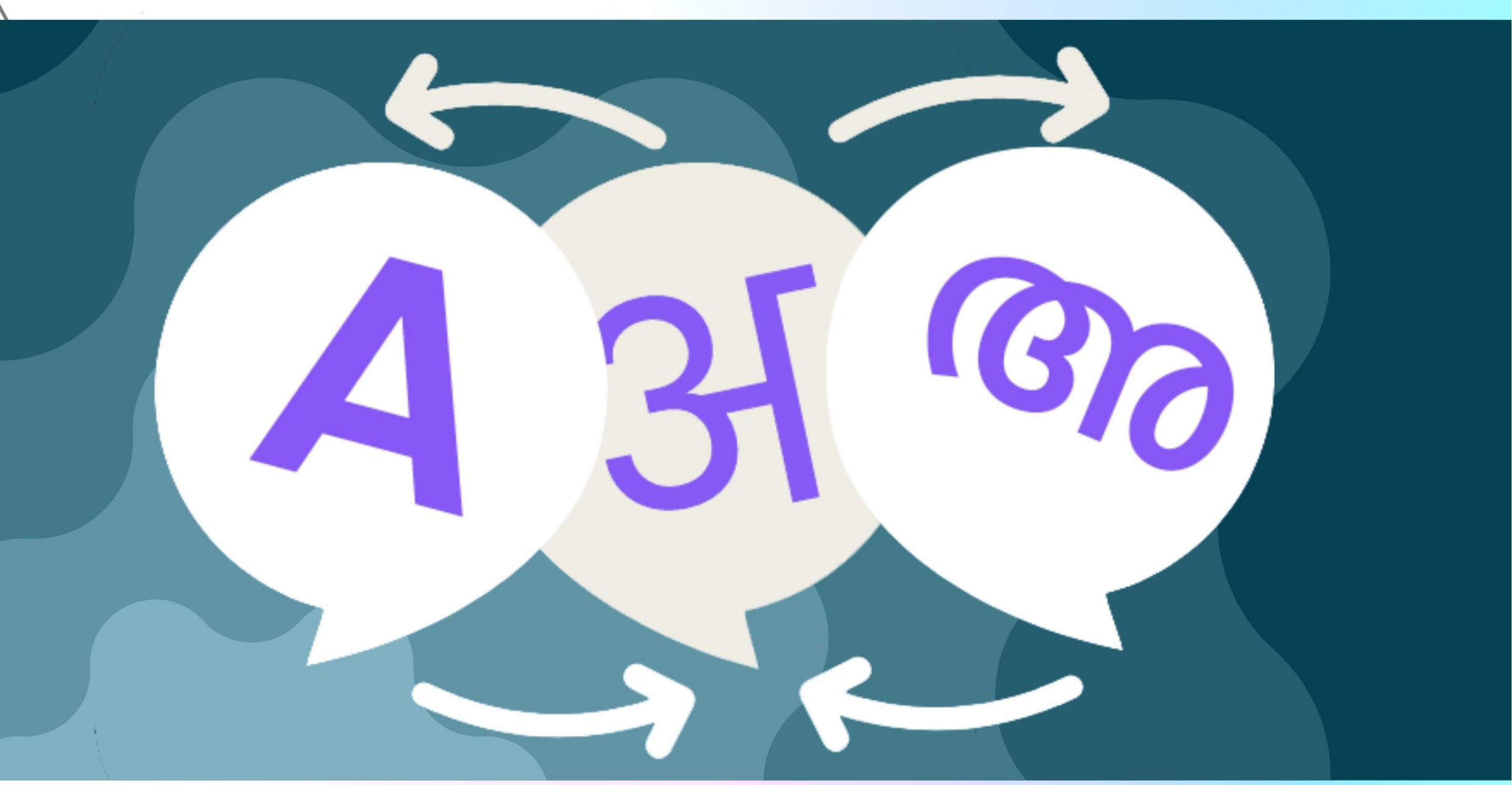

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY
The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

Course Code: M23HD01AC

Semester-I

Ability Enhancement Compulsory Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Documentation

M23HD01AC

अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

Semester I

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-966907-1-7

9 788196 690717

Academic Committee

Dr. Jayachandran R. (Chair)
Dr. P.G Sasikala
Dr. Pramod Kovapurath
Dr. R. Sethunath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. B Ashok
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Karthika M. S., Krishna Preethy A.R.

Review

Content : Ranjini G. Nair
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Ranjini G. Nair

Edit

Ranjini G. Nair

Scrutiny

Dr. Sophia Rajan, Dr. Karthika M.S., Dr. Indu G. Das, Dr. Sudha T., Krishna Preethi A.R.

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

November 2023

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2023

Message from Vice Chancellor

Dear,

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum ‘access and quality define equity’. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centers around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavors.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known “blended format”. Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The university is committed to provide you stimulating learning experience. The post graduate programme in Hindi has a unique blend of language and literature. The focus of the programme is on enhancing the capabilities of the learners to undergo a deeper comprehension of the sociology of the forms in literature although the required credits are in place to learn other aspects of Hindi literature. Care has been taken to expose the students to recent trends in Hindi literature. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,

Dr. P.M. Mubarak Pasha 01.11.2023

Contents

BLOCK-01 अनुवाद सिद्धांत............ 01

इकाई : 1 अनुवादः परिभाषा, क्षेत्र और विस्तार............ 02

इकाई : 2 अनुवाद के प्रकार............ 09

इकाई : 3 अनुवाद की अवधारणा और आयाम............ 17

इकाई : 4 अनुवादक............ 23

BLOCK-02 अनुवाद का अभ्यास (Practice of translation)............ 28

इकाई : 1 हिन्दी से मलयालम और अंग्रेजी में अनुवाद............ 29

इकाई : 2 मलयालम से हिन्दी में अनुवाद............ 37

इकाई : 3 अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद............ 47

इकाई : 4 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद- कहानी, कविता............ 54

अनुवाद सिद्धांत

BLOCK-01

Block Content

Unit 1: अनुवादः परिभाषा, क्षेत्र और विस्तार

Unit 2: अनुवाद के प्रकार

Unit 3: अनुवाद की अवधारणा और आयाम

Unit 4: अनुवादक

इकाई : 1

अनुवादः परिभाषा, क्षेत्र और विस्तार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अनुवाद के अर्थ एवं स्वरूप को समझता है
- अनुवाद की परिभाषा से अवगत होता है
- अनुवाद की प्रासंगिकता से अवगत होता है
- अनुवाद के सैद्धांतिक आयाम को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

एक भाषा में निहित अर्थ या संदेश को दूसरी भाषा में यथावत् व्यक्त करना अर्थात् एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में कहना 'अनुवाद' है। अनुवाद का कार्य व्यापारियों द्वारा पहले नये स्थानों की यात्रा करने के लिए और उस क्षेत्र के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए इस्तेमाल होता था। आज विभिन्न भाषा-भाषियों की भावनाओं, विचारों, रायों और कई प्रकार के तथ्यों को एक-दूसरे तक पहुँचाने के लिए अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। भारतीय संदर्भ में, अनुवाद पाली, प्राकृत, देवनागरी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पवित्र ग्रंथों के अनुवाद के साथ शुरू हुआ। यह दुनिया भर में नैतिक मूल्यों, लोकाचार, परंपरा व मान्यताओं और संस्कृति के संचारण करने में मदद करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, क्षेत्रीय भाषा, वैज्ञानिक युग, व्यावसायिक भाषा

Discussion / चर्चा

आधुनिक युग में मानव एक दूसरे पर निर्भर है। किसी भी व्यक्ति के लिए सभी भाषाओं को आत्मसात करना संभव नहीं है। मानव जाति अपने पूर्वजों के भावों और विचारों से परिचित होने के लिए उन्हें अपनी वर्तमान भाषा में लाने की इच्छुक रहती है और यह प्रक्रिया अनुवाद के कारण ही सफल होती है। अनुवाद की अनिवार्यता प्राचीन काल से ही महसूस हुई थी। आधुनिक युग विज्ञान का युग है, प्रगति तथा विकास का युग है। अतः वर्तमान स्थिति में अनुवाद की आवश्यकता अधिक महसूस हो रही है। जिस प्रकार किसी देश की प्रगति के लिए अनुवाद आवश्यक है उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है।

1.1.1 अनुवाद अर्थ एवं स्वरूप

▶ अनवाद के लिए प्रयुक्त अंग्रेंजी शब्द Translation है

'अनुवाद' शब्द संस्कृत का यौगिक शब्द है जो 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' के संयोग से बना है। संस्कृत के 'वद्' धातु में 'घञ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद'। 'वद्' धातु का अर्थ है 'बोलना या कहना' और 'वाद' का अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'अनु' उपसर्ग 'अनुवर्तिता' के अर्थ में व्यवहृत होता है। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जुड़कर बनने वाले शब्द 'अनुवाद' का अर्थ हुआ-'प्राप्त कथन को पुनः कहना'।

अनुवाद के स्वरूप निर्धारण के लिए कोई एक विधान नहीं अपनाया जा सकता। यह इस बात पर निर्भर करता है कि अनुवाद की सामग्री कैसी है। क्योंकि सामग्री की प्रकृति ही अनुवाद का स्वरूप निर्धारित करती है। अनुवाद के दो रूप होते हैं- साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद। साहित्यिक विषयों के अनुवाद में भाषा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति होती है तो वैज्ञानिक या साहित्येतर अनुवाद में विशिष्ट व्यावसायिक भाषा का व्यावहारिक और समुचित प्रयोग किया जाता है। साहित्येतर अनुवाद की प्रकृति वस्तुपरक एवं स्थूल होती है जबकि साहित्यिक अनुवाद की आत्मपरक एवं सूक्ष्म। साहित्येतर अनुवाद जटिल होते हैं और साहित्यिक अनुवाद सरल। इन विभिन्नताओं के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया भी भिन्न होती है और उसके स्वरूप भी।

▶ अनवाद दो प्रकार के होतें हैं

1.1.2 अनुवाद की परिभाषा

अनुवाद के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख किया जा रहा है:-

नाइडा: "Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language , first in meaning and secondly in style."

'अनुवाद से तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।'

कैटफोड: "Translation is the replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language."

'एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।'

सैमुएल जॉनसन: 'मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद (Translation) है।'

फॉरेस्टन: "Translation is the transference of the content of a text from one language into another, bearing in mind that we cannot always dissociate the content from the form."

'एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद (Translation) कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्त्व या कथ्य को संरचना (रूप) से

हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।'

हैलिडे: 'अनुवाद एक सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।'

न्यूमार्क: 'अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।'

डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में: "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"

डॉ. सुरेश सिंहल का कहना है: "एक भाषा की रचना के सन्देश को यथासम्भव समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति द्वारा कथ्य एवं शैली के स्तर पर दूसरी भाषा में पुनःसृजित एवं सम्प्रेषित करना अनुवाद है।"

देवेन्द्रनाथ शर्मा: 'विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।'

▶ सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया

संक्षेप में कह सकते हैं कि -एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

1.1.3 अनुवादः शिल्प, कला, विज्ञान या शास्त्र

▶ अनुवाद स्वतंत्र और संश्लिष्ट विधा है

अनुवाद शिल्प और कला है। यह शास्त्र और विज्ञान भी है। इसे जो साध ले गया, वह मूल रचनाकार के साथ अमर हो जाता है। यह न तो भाषांतर है और न ही रूपांतर। सही अर्थों में यह किसी सृजन का भाषांतर के साथ-साथ पुनःसृजन भी है। 'अनुवाद' को कोई सरल या सरस प्रक्रिया मानता है तो कोई इसे बेहद जटिल और नीरस क्रिया मानता है। आज अनुवाद एक स्वतंत्र विधा के रूप में बहुत संश्लिष्ट होकर निखरा है । कभी अनुवाद 'कला' लगता है तो कभी 'शिल्प', लेकिन वस्तुतः यह 'विज्ञान' भी है ।

▶ कलात्मक अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद से भिन्न होता है

अनुवाद को कला मानने का मुख्य आधार यह है कि सहज समतुल्य की खोज में अनुवादक को प्रायः पुनःसृजन करना पडता है। प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति एवं विशेषताएँ होती हैं और प्रत्येक लेखक की अपनी अभिव्यक्ति शैली होती है। अतः अनुवाद मात्र शाब्दिक भाषान्तर नहीं है, बल्कि एक प्रकार की पुनराभिव्यक्ति है और इस पर अनुवादक के व्यक्तित्व का भी प्रभाव पडता है। साहित्य में स्रोतभाषा की रचना की सौंदर्य चेतना, कलात्मकता और ऊष्मा को आत्मसात करना और उसका समतुल्यतापूर्वक लक्ष्यभाषा में प्रतिस्थापन करना यांत्रिक भाषाज्ञान द्वारा संभव नहीं है। ऐसा करने पर अनुवादक मूल रचना के साथ न्याय नहीं कर पाएगा। अनुवाद को कला की दृष्टि से परखने पर हम पाते हैं कि ऐसे अनुवाद में अर्थ संश्लिष्ट होते हैं, सांकेतिक होते हैं और अनिश्चित भी होते हैं। इसलिए अनुवादक कोरा अनुवादक रहे, वह मूल रचना के अर्थ को संपूर्णता में वहन करे, शैली की भंगिमाओं को समझे और उन्हें लक्ष्यभाषा में सुरक्षित रखे।

विज्ञान किसी भी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान होता है। किसी भी विषय के जितने अंशों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक विवेचन किया जा सकता है उतने अंशों का अध्ययन विज्ञान की सीमा में आता है। अनुवाद को वैज्ञानिक दृष्टि से परखने पर यह ज्ञात

होता है कि अनुवादक अनुवाद के वस्तुनिष्ठता, तर्कसम्मतता, निरपेक्षता, सटीकता, शुद्धता आदि तत्वों के आधार पर विश्लेषण एवं अध्ययन करता है। वह मूल कृति को सही अर्थों को समझकर अनुवाद करने की चेष्टा करता है। अनुवादक भाषा के नियमों का पालन करता है। वह अनुवाद-अध्ययन में अपने व्यक्तित्व को, अपनी भावना को और अपनी कल्पना को संश्लिष्ट नहीं करता। यह सारी अनुवाद प्रक्रिया बौद्धिक होती है, क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टिवाला अनुवादक एक तथ्यात्मक व्यक्ति होता है। जिस प्रकार एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में विभिन्न यंत्रों का प्रयोग करता है, उसी प्रकार अनुवाद का भी अनुवाद संबंधी कई औजारों का प्रयोग करता है, जैसे- शब्दकोश, विश्वकोश, व्याकरण, नियमावली आदि।

▶ वैज्ञानिक अनुवाद में निश्चित नियमों का पालन करना पडता है

1.1.4 स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से अभिप्राय

'स्रोत भाषा' और 'लक्ष्य भाषा' का प्रयोग अनुवाद के सन्दर्भ में किया जाता है। एक भाषा का दूसरी भाषा में कथन अर्थात एक भाषा के कथन को दूसरी भाषा के कथन में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद से तात्पर्य है कि एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में इस प्रकार कहा जाए कि पहली भाषा का भाव स्पष्ट हो जाये। अनुवाद के प्रसंग में कम से कम दो भाषाओं का होना अनिवार्य है। इस प्रक्रिया में 'जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्त्रोत भाषा कहते है' तथा 'जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।' जैसे- अंग्रेज़ी भाषा में कही गयी बात को हिन्दी में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाये कि दोनों का अर्थ एक ही हो, दोनों का भाव व उद्देश्य एक ही हो। जैसे- Tulsidas is a great poet को हिन्दी में 'तुलसीदास एक महान कवि है' कहा जाएगा।

▶ स्रोत भाषा में मूल जानकारी उपलब्ध होती है

स्रोत भाषा, वह भाषा है जिसमें कथित बात को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाता है। इसके विपरीत, लक्ष्य भाषा वह भाषा है, जिसमें अनुवाद किया जाता है। दूसरे शब्दों में, जिस भाषा के कथन का अनुवाद करना है, उसे 'स्रोत भाषा' कहते हैं और जिस भाषा में अनुवाद करना है, उसे 'लक्ष्य भाषा' कहते हैं। मान लीजिए, हिन्दी भाषा में लिखी हुई किसी कविता या कहानी का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है तो इस प्रसंग में 'हिन्दी' स्रोत भाषा और 'अंग्रेजी' लक्ष्य भाषा कहलायेगी। इसी प्रकार कालिदास की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद लीजिए। इसमें 'संस्कृत' स्रोत भाषा कहलाएगी और 'हिन्दी' लक्ष्य भाषा कहलाएगी। कोई भी अनुवाद स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में सावधानी से पुनः प्रस्तुत करता है। इसी दृष्टि से एक अनुवादक के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का अच्छा ज्ञान होना अति आवश्यक है।

▶ अनुवादक के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना चाहिए

1.1.5 अनुवाद की प्रासंगिकता

हमारे दैनिक जीवन में अनुवाद का महत्व जितना हम समझते हैं उससे कहीं अधिक है। उसका महत्व बहुआयामी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि दुनिया भर में अंग्रेजी व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। हालाँकि, उनमें से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो अंग्रेज़ी को दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि ज्यादातर लोग वास्तव में बेहतर प्रतिक्रिया तभी दे पाते हैं, जब उनसे उनकी मूल भाषा में बात की जाए। लोग अपनी मूल भाषा को ही ज़्यादा पसंद करते हैं। क्योंकि इसके द्वारा वे अपने भावों तथा विचारों को सहज एवं अनायास रूप में आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त कर पाते हैं। इसलिए हमें अनुवाद की आवश्यकता है। यह लोगों को अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने की अनुमति देगा।

▶ अनुवाद का महत्व बहुआयामी है

संचार और यात्रा आगे बढ़ रहे हैं। जब विदेशों में व्यापार करने की बात आती है तो भूगोल अब कोई मुद्दा नहीं रह गया है। व्यापारियों को अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी ढंग से संवाद करने उच्च गुणवत्ता वाले अनुवाद की आवश्यकता है। इस तरह की मांग के साथ, अनुवाद जल्द ही समाप्त नहीं होने वाला है। दुनिया भर में नयी जानकारी, ज्ञान और विचारों के प्रसार के लिए अनुवाद आवश्यक है। विभिन्न संस्कृतियों के बीच प्रभावी आदान-प्रदान के लिए यह नितांत आवश्यक है। नयी सूचनाओं के प्रसार की प्रक्रिया में अनुवाद एक ऐसी चीज है जो इतिहास को बदल सकता है। यह एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा लोग विभिन्न कार्यों को जान सकते हैं और दुनिया के बारे में अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं।

- नयी सूचनाओं के प्रसार की प्रक्रिया में अनुवाद सहायक सिद्ध होता है

यात्रा और पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद का सबसे अधिक प्रभाव है। दस्तावेजों और ब्रोशर से लेकर नियमों और शर्तों के समझौतों तक, अनुवाद ने व्यवसायों को कई अलग-अलग भाषाओं में असाधारण सेवाएं प्रदान करने में मदद की है। सभी अलग-अलग क्षेत्रों के ग्राहकों की यात्रा करने की इच्छा है और यह कंपनियों की ज़िम्मेदारी है कि वे इसे यथासंभव आसान करायें। एक ही समय में व्याख्या का उपयोग यात्रा और पर्यटन में ठीक से किया जाने पर सभी को लाभ पहुँचता है। इस तरह अनुवाद की अपनी प्रासंगिकता है।

- अनुवाद से दुनिया भर की नयी जानकारी, ज्ञान और विचारों के प्रसार होना

1.1.6 अनुवाद के सैद्धांतिक आयाम

अनुवाद को सैद्धान्तिक दृष्टि से परखने पर मालूम होता है कि वह एक ऐसा सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक, परन्तु विभिन्न भाषाओं के पाठों के मध्य होता है। इस संबंध का उद्‌घाटन तुलनात्मक पद्धति के अध्ययन से किया जाता है। इन दोनों का समन्वित रूप इस धारणा में मिलता है कि अनुवाद एक निष्पत्ति है- कार्य का परिणाम अनुवाद है- जो अपने मूल पाठ से पर्यायता के सम्बन्ध से जुड़ा है। निष्पत्ति के रूप में अनुवाद को 'अनूदित पाठ' कहा जाता है। इस दृष्टि से एक मूल पाठ के अनेक अनुवाद हो सकते हैं। इस प्रकार सक्रियात्मक दृष्टि से अनुवाद को जहाँ भाषा प्रयोग की एक विधा के रूप में जाना जाता है, वहाँ सैद्धान्तिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध भाषा पाठ तुलना तथा व्यतिरेकी विश्लेषण की तकनीकों पर आधारित भाषा सम्बन्धों के प्रश्न से जोड़ा जाता है।

- अनुवाद को भाषा प्रयोग की एक विधा के रूप में मानना

अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की शाखा कहा गया है। वस्तुतः अपने इस रूप में यह अपने प्रक्रिया रूप तथा सम्बन्ध रूप परिभाषाओं की योजक कड़ी है। इसका सक्रियात्मक आधार अनूदित पाठ है, जिसके मूल में 'अनुवाद एक निष्पत्ति है' की धारणा निहित है। इन परिभाषाओं से अनुवाद के विषय में जो अन्य जानकारी मिलती है, वे इस प्रकार हैः–

- अनुवाद एक भाषा या भाषाभेद से दूसरी भाषा या भाषाभेद में होता है।
- यह प्रक्रिया, परिवर्तन, स्थानान्तरण, प्रतिस्थापन या पुनरावृत्ति की प्रकृति की होती है।
- उपर्युक्त की विशेषता यह है कि इसका दोनों भाषाओं में समान अर्थ होता है। यह अर्थ की समानता व्यापक दृष्टि से होती है और भाषिक अर्थ से लेकर सन्दर्भमूलक अर्थ तक व्याप्त रहती है।

संक्षेप में कहा जाए तो एक भाषा के विशिष्ट भाषाभेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है, जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य से निष्पन्न अर्थ, प्रयुक्ति और शैली की विशेषता, विषयवस्तु तथा सम्बद्ध सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को यथासम्भव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत हो।

- अनुवाद अपने स्वरूप और प्रकृति के आधार पर एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अनुवाद स्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्यभाषा में व्यक्त करना है। अनुवाद में पूर्णतः समान अभिव्यक्ति की खोज की जाती है। अनुवाद में ऐसी अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है जो स्रोतभाषा की छाया में कलुषित न हो। अनुवाद में मूल रचना के अर्थ के साथ-साथ शैली को भी सुरक्षित रखा जाता है। अनुवाद की न्यूनतम शर्त द्विभाषिकता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अनुवाद के अर्थ एवं स्वरूप पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
2. अनुवाद की परिभाषा देकर उसकी व्याख्या कीजिए।
3. अनुवाद कला, विज्ञान या शास्त्र है? स्पष्ट कीजिए।
4. स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में क्या अंतर है?
5. अनुवाद की प्रासंगिकता पर आलेख तैयार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कला: कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

अनुवाद के प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों से अवगत होता है
- विषय के आधार पर अनुवाद के प्रकारों से अवगत होता है
- अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

जब अनुवाद में दो भाषाओं का प्रस्ताव होता है, तो किसी एक ही पद्धति में उसका अनुवाद नहीं हो पाता। रचना, विषय, अनुवाद सिद्धात आदि के विभिन्न रूपों के कारण विभिन्न प्रकारों में अनुवाद करना पड़ता है। अनुवाद प्रकारों के निर्धारण का उद्देश्य अनुवाद प्रणालियों के विविध प्रकारों में एक स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना भी है ताकि अनुवाद विषयक चर्चा कर भाषा की व्यापकता को ठीक से समझा जा सके।

Keywords / मुख्य बिन्दु

राजभाषा, प्रशासनिक कार्यव्यवहार, प्रशासनिक शब्दावली, संसदीय शब्द

Discussion / चर्चा

- साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतरअनुवाद

अनुवाद विविध प्रकार के हो सकते हैं, जिनके अन्तर्गत साहित्यिक एवं साहित्येतर विषयों को रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनुवाद की प्रणालियों या पद्धतियों को भी अनुवाद के प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप की चर्चा काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथा-साहित्य का अनुवाद आदि प्रमुख विधाओं के संदर्भ में की जा सकती है। ठीक इसी तरह साहित्येतर अनुवाद में मुख्यतः तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, मानविकी एवं समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद, सूचना और दूरसंचार का अनुवाद, प्रशासनिक एवं वैधानिक अनुवाद आदि को रखा जा सकता है।

1.2.1 भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर

भाषा की अभिव्यक्त के आधार पर अनुवाद को निम्नलिखित रूप से बाँटा जा सकता है:-

1.2.1.1 गद्यानुवाद

गद्यानुवाद सामान्यतः गद्य में किए जानेवाले अनुवाद को कहते हैं। किसी भी गद्य रचना

▶ गद्यानुवाद में मूल गद्य का गद्य में ही अनुवाद किया जाता है

▶ छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहा जाता है

▶ पद्यानुवाद में गद्य या पद्य का पद्य में अनुवाद होता है

▶ स्रोत भाषा की समग्री को लक्ष्य भाषा की किसी भी विधा में अनूदित करना

▶ नाट्यानुवाद के लिए अभ्यास की अति-आवश्यकता है

▶ कथानुवाद सबसे प्रसिद्ध कार्य माना जाता है

का गद्य में ही किया जाने वाला अनुवाद 'गद्यानुवाद' कहलाता है। किन्तु कुछ विशेष कृतियों का पद्य से गद्य में भी अनुवाद किया जाता है। जैसे 'मेघदूतम्' का हिन्दी कवि नागार्जुन द्वारा किया गद्यानुवाद।

1.2.1.2 पद्यानुवाद

पद्य का पद्य में ही किया गया अनुवाद 'पद्यानुवाद' की श्रेणी में आता है। दुनिया भर में विभिन्न भाषाओं में लिखे गए काव्यों एवं महाकाव्यों के अनुवादों की संख्या अत्यन्त विशाल है। इलियट के 'वेस्टलैण्ड', कालिदास के 'मेघदूतम्' एवं 'कुमारसंभवम्' तथा टैगोर की 'गीतांजलि' का विभिन्न भाषाओं में पद्यानुवाद किया गया है। साधारणतः पद्यानुवाद करते समय स्रोत-भाषा में व्यवहृत छन्दों का ही लक्ष्य-भाषा में व्यवहार किया जाता है। इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहते हैं।

1.2.1.3 मुक्त छंदानुवाद

यह अनुवाद मुक्त छंद में होता है। इसमें जो छंद होता है वह तुक-मात्रा आदि उन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक हैं। शेक्सपियर के कई हिन्दी अनुवाद इसके उदाहरण हैं। सामान्यतः मूल सामग्री मुक्त छंद में होने पर ही मुक्त छंदानुवाद किया जाता है, किंतु मूल गद्य या पद्य के भी ऐसे अनुवाद हो सकते हैं, और होते हैं।

1.2.2 विषय के आधार पर

विषय के आधार पर साहित्यिक अनुवाद निम्नलिखत हैंः-

1.2.2.1 काव्यानुवाद

स्रोत भाषा में लिखे गए काव्य का लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरण काव्यानुवाद कहलाता है। यह आवश्यकतानुसार गद्य, पद्य एवं मुक्त छन्द में किया जा सकता है। होमर के महाकाव्य 'इलियट' एवं कालिदास के 'मेघदूतम्' एवं 'ऋतुसंहार' इसके उदाहरण हैं।

1.2.2.2 नाट्यानुवाद

किसी भी नाट्य कृति का नाटक के रूप में ही अनुवाद करना नाट्यानुवाद कहलाता है। नाटक रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। अतः इसके अनुवाद के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। संस्कृत के नाटकों के हिन्दी अनुवाद तथा शेक्सपियर के नाटकों के अन्य भाषाओं में किए गए अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

1.2.2.3 कथानुवाद

कथानुवाद के अन्तर्गत कहानियों एवं उपन्यासों का कहानियों एवं उपन्यासों के रूप में ही अनुवाद किया जाता है। विश्व प्रसिद्ध उपन्यासों एवं कहानियों के अनुवाद काफ़ी प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं। प्रेमचन्द की कहानियों का दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। रूसी उपन्यास 'माँ', अंग्रेजी उपन्यास 'लैडी चैटर्ली का प्रेमी' तथा हिन्दी के 'गोदान', 'त्यागपत्र' तथा 'नदी के द्वीप' के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुए हैं।

साहित्येतर अनुवाद में मुख्यतः निम्नलिखित अनुवाद होते हैं।

1.2.2.4 कार्यालयी अनुवाद

कार्यालयी अनुवाद में प्रशासनिक पत्राचार तथा कामकाज का अनुवाद होता है। जैसा कि विदित है स्वतंत्रता के पश्चात संविधान ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का संकल्प तो लिया,

पर कुछ राजनीतिक और सामाजिक दुविधाओं के चलते वह आज तक कार्यरूप नहीं ले सका। आज राजभाषा के मसले पर भारत में द्विभाषिक नीति लागू है। अंग्रेजी को संविधान ने दस साल में राजभाषा के रूप से पदच्युत करने का प्रारूप बनाया था, पर आज भी वह अपने स्थान पर किंचित भिन्न रूप में डटी हुई है। हर राज्य को अपनी राजभाषा निर्धारित करने की स्वतंत्रता संविधान ने दी थी और राज्यों ने उसके अनुरूप राजभाषा का निर्धारण भी किया भी है, किन्तु संघीय सरकारों से उसके प्रशासनिक कार्य व्यवहार अंग्रेज़ी में ही होते हैं। अब हिन्दी के साथ अंग्रेजी भी है और राज्यों के प्रकरण में उनकी अपनी राजभाषाएँ भी हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। सभी जानते हैं कि प्रशासनिक शब्दावली का अपना एक विशिष्ट रूप है, जो बहुधा अंग्रेज़ी से अनुवाद पर आधारित होता है। पारिभाषिक शब्द इसी प्रकार की प्रशासनिक शब्दावली का एक प्रमुख हिस्सा हैं। एक पत्रकार के लिए सरकार के कामकाज पर आधारित समाचार बनाते समय इस शब्दावली की सामान्य जानकारी का होना अनिवार्य है। अनेक संसदीय शब्दों का हिन्दी में प्रचलन इसी शब्दावली के आधार पर हो गया है।

▶ कार्यालयी अनुवाद में प्रशासनिक पत्राचार तथा कामकाज का अनुवाद होता है

1.2.2.5 वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में विषय मुख्य है और शैली गौण। साहित्यिक अनुवाद में प्रायः 'क्यों' से ज्यादा 'कैसे' का महत्व होता है जबकि वैज्ञानिक अनुवाद में 'कैसे' से ज्यादा 'क्या' का महत्व होता है। इसमें भावानुवाद त्याज्य है और प्रायः शब्दानुवाद अपेक्षित है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अपेक्षित है, ध्वन्यात्मक या व्यंग्यात्मक शब्दावली का नहीं। कुल मिलाकर इस प्रकार के अनुवाद में सूचना, संकल्पना तथा तथ्य महत्वपूर्ण होते हैं। सबसे ज़रूरी बात यह है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में अनुवादक विषय का सम्यक् जानकार हो और साथ ही प्रशिक्षित भी। तभी वह अनुवाद के साथ न्याय कर पाएगा।

▶ वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में भावानुवाद नहीं होता

1.2.2.6 वाणिज्यिक अनुवाद

यह क्षेत्र व्यापार के साथ-साथ प्रमुखतः बैकिंग व्यवसाय का है। सभी को विदित है कि समूचे विश्व की संचालक शक्ति अब पूँजी हो चली है। भूमंडलीकरण और विश्वग्राम जैसी उत्तराधुनिक अवधारणाएँ प्रकारांत से इसी के गिर्द घूमती हैं। भूमंडल अब शीतयुद्ध के दौर से बाहर आकर एक ध्रुवीय हो चला है, जिसका संचालन दुनिया के कुछ विकसित देशों के गुट के हाथ में है। इन स्थितियों में पत्रकारिता पर भी इस तरह की उत्तराधुनिक अवधारणाओं का प्रभाव देखा जा सकता है। पत्रकारिता खुद एक पेशेवर संस्था है और भारत में इसका सम्बन्ध कुछ बड़े व्यापारिक घरानों से है। आम आदमी के जीवन में बाजार का स्थान अब निश्चित है और समाचार पत्रों में इस आशय के समाचारों की भरमार होती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के समाचारों का निर्माण अक्सर सम्बन्धित विषयवस्तु के अनुवाद द्वारा ही सम्भव हो पाता है। इस तरह के अनुवाद की अपनी शब्दावली होती है, जिसकी प्राथमिक जानकारी पत्रकार को होना जरूरी है। आम आदमी के जीवन में बैंकिंग का भी एक निश्चित महत्व है। बैंकिंग के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग मुख्य रूप से दो स्तरों पर होता है- एक राजभाषा के स्तर पर और दूसरा जनभाषा के स्तर पर। हिन्दी को राजभाषा के रूप में सम्मान दिलाए जाने के कुछेक औपचारिक प्रयासों में बैंकों द्वारा हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिए जाने की नीति शामिल है। दरअसल मामला राजभाषा का न होकर जनभाषा का है। बैंकों को अपनी पहुँच जनता तक बनानी होती है और इसके लिए वे हिन्दी के इस्तेमाल पर बल देते हैं। हर बैंक

> ▶ वाणिज्यिक अनुवाद की अपनी शब्दावली होती है

में चूँकि महत्वपूर्ण मसौदे अंग्रेज़ी में ही तैयार किए जाते हैं लेकिन जनता तक उन्हें पहुँचाने के लिए उनका सरल हिन्दी अनुवाद अनिवार्य होता है। फलतः हर बैंक में हिन्दी अधिकारी तैनात किये गये हैं। एक पत्रकार के लिए यह सब जानना इसलिए ज़रूरी है, क्योंकि उसे बैंकों द्वारा समय-समय पर जारी की जानेवाली ऋण योजनाओं पर समाचार बनाने होते हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर बैंक की ऋण सम्बन्धी नीतियों और उतार-चढ़ाव की जानकारी भी उसे पाठकों तक सरल और सही रूप में पहुँचानी होती है।

1.2.2.7 विधि का अनुवाद

> ▶ विधिक अनुवाद में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्व होता है

इसमें एक भाषा की विधि सम्बन्धी अर्थात् कानून की सामग्री को दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। कानून की किताबें, अदालत के मुकद्दमे, तत्सम्बन्धी विभिन्न आवेदन-पत्र, कानूनी संहिताएँ, नियम-अधिनियम, संशोधित अधिनियम आदि कानूनी अनुवाद के प्रमुख हिस्से हैं। इस प्रकार के अनुवाद में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्व होता है। इसमें भावार्थ नहीं, शब्दार्थ महत्वपूर्ण होता है। इसके प्रत्येक शब्द का अर्थ स्पष्ट होता है। एक शब्द का एक ही अर्थ अपेक्षित होता है। इस प्रकार के अनुवाद की भाषा पूरी तरह तकनीकी प्रकृति की होती है।

1.2.3 अनुवाद की प्रकृति के आधार पर

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के निम्नलिखित रूप होते है:-

1.2.3.1 मूलनिष्ठ अनुवाद

> ▶ मूल का अनुगमन करना

मूलनिष्ठ अनुवाद कथ्य और शैली दोनों की दृष्टि से मूल का अनुगमन करता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक का प्रयास रहता है कि अनूदित विचार या कृति स्रोत-भाषा के विचारों एवं अभिव्यक्ति के निकट रहे।

1.2.3.2 मूलमुक्त अनुवाद

> ▶ मूलाधृत अनुवाद

मूलमुक्त अनुवाद को भोलानाथ तिवारी ने मूलाधारित अथवा मूलाधृत अनुवाद भी कहा है। वैसे तो मूलमुक्त का अर्थ ही होता है मूल से हटकर, किन्तु किसी भी अनुवाद में विचारों के स्तर पर परिवर्तन की गुँजाइश नहीं होती। अतः यहाँ मूल से भिन्न का अर्थ है शैलीगत भिन्नता तथा कहावतों एवं उपमानों का देशीकरण करने की अनुवादक की स्वतंत्रता।

1.2.3.3 शब्दानुवाद

> ▶ अंग्रेजी में लिटरल ट्रांसलेशन, वर्ड फॉर वर्ड ट्रांसलेशन, वर्बल ट्रांसलेशन आदि शब्दानुवाद के लिए प्रयुक्त शब्द हैं

शब्दानुवाद से तात्पर्य कथ्य के संप्रेषण से ही है। इस के लिए अंग्रेजी में लिटरल ट्रांसलेशन, वर्ड फॉर वर्ड ट्रांसलेशन, वर्बल ट्रांसलेशन आदि शब्दों का प्रयोग होता है। लेकिन 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' अनुवाद अच्छा नहीं माना जाता। हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करते हुए कर्ता, कर्म और क्रिया का यथावत् विन्यास तो दोषपूर्ण नहीं होगा। किन्तु हिन्दी भाषा-व्याकरण के अनुरूप अंग्रेज़ी भाषा-व्याकरण सही नहीं होगी और न ही अंग्रेज़ी के अनुरूप हिन्दी। दोनों की मूल प्रकृति में भेद है। अतः I am going to market का अनुवाद 'मै हूँ जा रहा बाजार' गलत है। यह क्रमानुवाद है। क्रम का ध्यान न रखा जाय तो प्रति शब्द का अनुवाद करने से ऐसा प्रतीत होता है कि स्रोत भाषा की शैलीय छाया लक्ष्य भाषा पर आक्रान्त है। शब्दानुवाद तब अच्छा माना जाता है, जब प्रत्येक शब्द या प्रत्येक अभिव्यक्त इकाई (जैसे पद, पदबन्ध, मुहावरा, लोकोक्ति, उपवाक्य, वाक्य) का लक्ष्य भाषा में प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्य भाषा में सम्प्रेषित किया जाता है। शब्दानुवाद तथ्यात्मक

साहित्य जैसे-ज्योतिष, गणित, विज्ञान, संगीत, विधि, न्याय, वाणिज्य, बैंकिंग आदि के लिए अपेक्षित है।

1.2.3.4 सारानुवाद

> ▶ सारानुवाद में प्रतिवेदन-कार्य करने की क्षमता निहित है

जनसभा सम्मेलनों, राज्यसभा एवं लोकसभा के लम्बे-लम्बे भाषणों, वाद- विवादों आदि का सारानुवाद आशुलिपिक (आशुलेखन आदि कौशल से) करते हैं। उनमें प्रतिवेदन कार्य करने की क्षमता होती है। समग्र तथ्यों में सामग्रियों का सार सम्मिलित करते हुए अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य व्यावहारिक कार्यों में और प्रशासनिक कार्य, व्यवहार एवं समाचार संयोजन आदि में सारानुवाद की उपयोगिता निस्सन्देह है।

1.2.3.5 भावानुवाद

> ▶ भावानुवाद में अनुवाद का ध्यान कथ्य की आत्मा पर है

भावानुवाद में मूल के शब्द, वाक्यांश, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में सम्प्रेषित करते हैं। शब्दानुवाद में अनुवादक का ध्यान विशेषतः मूल सामग्री के शरीर पर होता है तो इसमें उसकी आत्मा पर। जिन पाठों में मूल पाठ के प्रत्येक शब्द का अनुवाद करना संभव नहीं होता। जैसे साहित्यिक पाठ या मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि का भावानुवाद किया जाता हैं।

1.2.3.6 व्याख्यानुवाद

व्याख्यानुवाद, अनुवाद से अधिक व्याख्या या भाष्य होता है। विस्तार करने की क्षमता अनुवादक के ज्ञान तथा दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। मूल रूप से व्याख्यानुवाद संस्कृत ग्रंथों के लिए उपयोगी है, क्योंकि सूत्र-शैली का प्रयोग पाणिनि के द्वारा बहुत हुआ है। इस प्रक्रिया में भाष्याकारों का बहुत महत्व रहा है। ज्योतिष, कल्प, निरुक्त छंद आदि षड्दर्शन रस के व्याख्याकार ने अत्यन्त उच्चकोटि का कार्य किया है। तिलक ने 'गीता रहस्य' में गीता का व्याख्यानुवाद ही प्रस्तुत किया है। मूल को स्पष्ट करने के लिए अनुवादक प्रामाणिक तथ्यों और प्रसंगों को जोड़कर विषय को प्रभावोत्पादक बना देता है।

> ▶ संस्कृत ग्रंथों के लिए व्याख्यानुवाद सबसे उपयोगी है

1.2.3.7 रूपांतरण

> ▶ साहित्यिक रचनाओं का रूपांतरण आज सर्व-प्रचलित कार्य है

आज कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि का रूपान्तरण किया जा रहा है। रामचरितमानस, कामायनी जैसी उच्च कृतियों का रूपान्तरण प्रस्तुत किया जा चुका है। शेक्सपियर के 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का 'दुर्लभबन्धु' अर्थात् 'वंशपुर का महाजन' नाम से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अनुवाद किया। दूरदर्शन पर 'तमस', 'कब तक पुकारू', 'कर्मभूमि', 'गबन' आदि उपन्यासों के रूपातंरण की प्रस्तुति हो चुकी है।

1.2.3.8 छायानुवाद

हिन्दी में छाया तथा छायानुवाद दो शब्दों का प्रयोग काफी मिलते-जुलते अर्थों में होता है। 'छाया' शब्द का एक प्रकार का पुराना प्रयोग संस्कृत नाटकों में मिलता है। उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं, किंतु पुस्तकों में प्राकृत कथन या छंद के साथ उसकी संस्कृत छाया भी रहती है। 'छाया' शब्द का एक दूसरा प्रयोग तब होता है, जब किसी पुस्तक की कुछ छाया या छायावत धुँधला प्रभाव लेते हुए स्वतंत्र रूप से कोई रचना की जाए। इसमें प्रायः नाम, स्थान, वातावरण आदि का देशीकरण कर लिया जाता है। भगवतिचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' के कथानक पर अनातोले फ्रांस के उपन्यास 'थाया' की छाया है।

> ▶ 'छाया' शब्द का एक प्रकार का पुराना प्रयोग संस्कृत नाटकों में मिलता है

1.2.3.9 आदर्शानुवाद

▶ स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहा जाता है

यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है, जिसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का अभिव्यक्तितः और अर्थतः लक्ष्य भाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समानकों द्वारा अनुवाद करता है। इसे स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहा जा सकता है। अनुवादक इसमें यथासाध्य अपना व्यक्तित्व नही आने देता है। अनुवाद मूल जैसा होता है। अर्थात् अनुवादक का प्रयास यह होता है कि मूल को पढ या सुनकर लक्ष्य भाषा-भाषी भी ठीक वही ग्रहण करे।

1.2.3.10 वार्तानुवाद या आशु अनुवाद

▶ अनुवचन और अनुवाचक

वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद जब दो भिन्न भाषा-भाषी आपस में बात करते हैं तो उनके बीच के अनुवादक को दुभाषिया कहते हैं। दुभाषिए द्वारा किए जानेवाले अनुवाद को किसी अन्य अधिक अच्छे शब्द के अभाव में हिन्दी में वार्तानुवाद की संज्ञा दिया गया है। कहीं-कहीं ऐसी व्यवस्था भी होती है कि कोई भाषण या वार्त्ता किसी एक भाषा में प्रसारित होती है, परंतु विभिन्न स्टेशनों पर उसके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद साथ-साथ सुने जा सकते हैं। जो लोग यह अनुवाद करते हैं उन्हें आशु अनुवादक और उनके कार्य को आशु अनुवाद कह सकते हैं। वार्तानुवाद कभी-कभी सटीक की तुलना में कामचलाऊ अधिक होता है। किंतु दुभाषिया चूँकि महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदि समस्याओं को समझने वाला एवं आशु-अनुवादक होना चाहिए। वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद को प्रायः अनुवचन कहते हैं तथा अनुवचन करने वाले को अनुवाचक।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अनुवाद कार्य में अनुवादक की भूमिका अहम होती है और अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में उसे अलग-अलग भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। मूलपाठ का विश्लेषण करते हुए वह पाठक की भूमिका में होता है, अंतरण करते हुए द्विभाषिक विद्वान की भूमिका में और अनूदित पाठ या पुनर्रचना प्रस्तुत करते हुए लेखक की भूमिका में। अनुवाद कई प्रकार के होते हैं। अनुवाद के प्रकारों का विभाजन दो तरह से किया जा सकता है। पहला अनुवाद की विषयवस्तु के आधार पर और दूसरा उसकी प्रक्रिया के आधार पर। उदाहरण के लिए विषयवस्तु के आधार पर साहित्यानुवाद, कार्यालयी अनुवाद, विधिक अनुवाद, आशुअनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद आदि। प्रक्रिया के आधार पर शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद तथा यांत्रिक अनुवाद।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों को समझाइए।
2. विषय के आधार पर अनुवाद के भेद पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
3. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कला: कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

अनुवाद की अवधारणा और आयाम

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अनुवाद की अवधारणाओं से अवगत होता है
- अनुवाद संबंधी समस्याओं को समझता है
- अनुवाद और साहित्यिक लेखन में जो भिन्नता है उससे अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

अनुवाद को कई परिभाषाओं में बाँध सकते हैं, पर कसा नहीं जा सकता। अनुवाद करते समय तीन बातों पर ध्यान देना जरूरी है। पहला है स्रोत भाषा के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव अपने मूल रूप में लाना। दूसरा यथासंभव समान या अधिक से अधिक समान अभिव्यक्ति की खोज करना और तीसरी अभिव्यक्ति का लक्ष्य भाषा के अनुरूप होना। इनकी पूर्ति करते समय कई समस्याएँ सामने आती हैं, जिन्हें अनुवाद की समस्याएँ कहा जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शब्दावली, मुहावरे, रूपात्मकता, लोकोक्तियाँ, सामाजिक सौहार्द

Discussion / चर्चा

सूचना, ज्ञान और विचारों के प्रसार के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है। अनोखी संस्कृतियों के बीच शक्तिशाली और सहानुभूतिपूर्ण संचार के लिए वस्तुतः अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए अनुवाद सामाजिक सौहार्द और शांति के लिए महत्वपूर्ण है।

1.3.1 अनुवाद की प्रासंगिकता

अनुवाद की क्षमताएँ और भी अधिक महत्वपूर्ण और वांछनीय होती जा रही हैं। आज के बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी समाज को भाषाओं और संस्कृतियों के बीच शक्तिशाली, कुशल और सहानुभूतिपूर्ण संचार की आवश्यकता है। यह कई कारणों से महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे संवाद और यात्रा आगे बढ़ रही है, व्यवसाय में बाधा कम बनती जा रही है। विदेश में कारोबार करने से कंपनियों को फायदा होता है। वे कुछ देशों में सेवाओं और उत्पादों की कम लागत, दूसरों की पेशेवर और व्यावसायिक जानकारी और व्यापार के लिए अतिरिक्त बाजारों

का लाभ उठा सकते हैं। जब वे एक अद्वितीय स्थानीय भाषा वाले देशों में वैकल्पिक होते हैं, तो वे प्रभावी ढंग से बोलने के लिए शानदार अनुवाद चाहते हैं। जब अनुवाद की मांग होती है तो अनुवादकों के लिए संभावनाएँ होती हैं। जब अनुवादकों की मांग होती है, तो अनुवाद अध्ययन की भी मांग होती है। वे उच्च स्तर पर व्यवसाय करने की क्षमताओं का अध्ययन करना चाहते हैं और संभवतः इस क्षेत्र को और भी आगे बढ़ाने में योगदान देना चाहते हैं।

▶ अद्वितीय स्थानीय भाषा वाले देशों में वैकल्पिकता

आगे देखते हुए भले ही अंग्रेज़ी इस समय दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित भाषा है, यह अब हमेशा नहीं रहेगी। जब कोई बाज़ार उभरता है और तेजी से बढ़ता है जैसा कि हाल के वर्षों में चीनी बाज़ार में हुआ है। तो उसकी स्थानीय भाषा में अनुवाद की मांग भी बढ़ने की संभावना है। सूचना, ज्ञान और विचारों के प्रसार के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है। यह अनोखी संस्कृतियों के बीच शक्तिशाली और सहानुभूतिपूर्ण संचार के लिए वस्तुतः महत्वपूर्ण है। इसलिए अनुवाद सामाजिक सौहार्द और शांति के लिए महत्वपूर्ण है।

▶ अनुवाद की बढती मांग

अनुवाद भी सबसे प्रभावी माध्यम है जिसके माध्यम से मनुष्य अद्वितीय कार्यों को पहचानते हैं जो उनके ज्ञान को बड़ा बनाते हैं। उदाहरण के लिए:- अरबी अनुवादक मध्य युग के दौरान ऐतिहासिक यूनानी दार्शनिकों के विचारों को जीवित रखने में सक्षम थे। बाइबिल का कम से कम 531 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। अनुवाद खेल गतिविधियों वाले समूहों और कंपनियों को भाषा की सीमाओं पर विजय पाने और वैश्विक सीमाओं से परे जाने में सहायता कर रहा है।

▶ अद्वितीय कार्यों को पहचान

प्रभावी, कुशल और सहानुभूतिपूर्ण अनुवाद के लिए विशेष रूप से पेशेवर अभ्यासकर्ताओं की आवश्यकता होती है। अनुवाद अध्ययन में पाठ्यक्रम भाषाविदों, भाषा स्नातकों और अनुवादकों के लिए शैक्षिक क्षेत्र की गहन जानकारी और अनुवाद विशेषज्ञ के रूप में अभ्यास करने की क्षमताओं का विस्तार करने का एक शानदार तरीका है। अनुवाद क्षेत्र के चारों ओर मनुष्यों के बीच शक्तिशाली संचार की अनुमति देता है। यह ज्ञान के प्रसारण के लिए एक संदेशवाहक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का रक्षक और विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। अत्यधिक पेशेवर अनुवादक महत्वपूर्ण हैं। अनुवाद अध्ययन अभ्यासकर्ताओं को अपनी क्षमताओं का विस्तार करने की अनुमति देता है।

▶ शैक्षिक क्षेत्र की गहन जानकारी

1.3.2 अनुवाद के सैद्धांतिक आयाम

सैद्धान्तिक दृष्टि से अनुवाद एक सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक, परन्तु विभिन्न भाषाओं के पाठों के मध्य होता है; परन्तु वे समानार्थक होने चाहिए। इस सम्बन्ध का उद्‌घाटन तुलनात्मक पद्धति के अध्ययन से किया जाता है। इन दोनों का समन्वित रूप इस धारणा में मिलता है कि अनुवाद एक निष्पत्ति है- कार्य का परिणाम अनुवाद है- जो अपने मूल पाठ से पर्यायता के सम्बन्ध से जुड़ा है। निष्पत्ति के रूप में अनुवाद को 'अनूदित पाठ' कहा जाता है। इस दृष्टि से एक मूल पाठ के अनेक अनुवाद हो सकते हैं। इस प्रकार सक्रियात्मक दृष्टि से अनुवाद को जहाँ भाषा प्रयोग की एक विधा के रूप में जाना जाता है, वहाँ सैद्धान्तिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध भाषा पाठ तुलना तथा व्यतिरेकी विश्लेषण की तकनीकों पर आधारित भाषा सम्बन्धों के प्रश्न से जोड़ा जाता है।

▶ अनूदित पाठ

अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की शाखा कहा गया है। वस्तुतः, अपने इस रूप में यह अपने प्रक्रिया रूप तथा सम्बन्ध रूप परिभाषाओं की योजक कड़ी है, जिसका सक्रियात्मक

आधार अनूदित पाठ है, जिसके मूल में 'अनुवाद एक निष्पत्ति है' की धारणा निहित है। अनुवाद एक भाषा या भाषाभेद से दूसरी भाषा या भाषा भेद में होता है। अतः कहा जाए तो एक भाषा के विशिष्ट भाषाभेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है, जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य से निष्पन्न अर्थ, प्रयुक्ति और शैली की विशेषता, विषयवस्तु, तथा सम्बद्ध सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को यथासम्भव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत हो।

- भाषा के विशिष्ट भाषाभेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना

1.3.3 अनुवाद की समस्याएँ

हालांकि अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में किया जाता है, पर हमारा संबंध प्रायः अंग्रेज़ी से हिन्दी, हिन्दी से अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी तथा हिन्दी से क्षेत्रीय भाषाओं में किये जानेवाले अनुवादों से है। इस बात पर नज़र डालने पर अनुवाद संबंधी कुछ समस्याएँ सामने आती है। हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थबिंब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबद्ध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिंब नहीं उभार सकता। इस प्रकार अनुवाद करते समय कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक मात्र है।

- हर भाषा का शब्द उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से संबद्ध

1.3.3.1 स्रोत और लक्ष्य भाषाओं का अच्छा ज्ञान

अनुवादक के लिए यह ज़रूरी है कि उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो। इससे वह स्रोत भाषा में कही गयी बात को ठीक तरह से ग्रहण करता है और उस बात को लक्ष्य भाषा में उसी रूप में सार्थक ढंग से अभिव्यक्त करता है। अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने दो भाषाएँ होती हैं। हर भाषा एक विशिष्ट परिवेश में पनपती है। इसलिए उसकी अपनी अनेक ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, मुहावरे विषयक या लोकोक्ति विषयक निजी विशेषताएँ होती है जो अन्य कई भाषाओं से कुछ भिन्न होती हैं। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि स्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्ति के पूर्णतः समान तथा शब्द और अर्थ की दृष्टि से संपूर्ण अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में हो।

- दोनों भाषाओं में समान अधिकार

1.3.3.2 विषय का पर्याप्त ज्ञान

अनुवाद करते समय विषय का पर्याप्त ज्ञान होना परमावश्यक है। विषय के सही ज्ञान के अभाव में अर्थ के अनर्थ होने की संभावना है। हर व्यक्ति को सभी विषयों का ज्ञान नहीं हो सकता। पर अनुवाद करते समय यदि अनुवाद के विषय का पूरा ज्ञान न हो तो उसे संबंधित व्यक्तियों या कोशों से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। नहीं तो अनुवाद करते समय कठिनाइयाँ उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

- अनुवादक को विषयों का ज्ञान होना ज़रूरी

1.3.3.3 भाषाओं के स्वभाव से परिचय

अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अच्छे ज्ञान के अतिरिक्त दोनों भाषाओं के स्वभाव से भी परिचित होना जरूरी है। यह स्वभाव प्रायः संबंधित क्षेत्र की संस्कृति से संबद्ध होता है। परंपरा के कारण एक भाषा में कुछ विशिष्ट अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है, जिनका दूसरी भाषा में शब्दांशः अनुवाद करने पर वह अटपटा और हास्यास्पद बन जाता है।

- सही ढंग से भाषा का प्रयोग करना

1.3.3.4 शब्दों का प्रयोग

शब्दों के प्रयोग पर अत्यधिक ध्यान देना आवश्यक है। यह बात क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी में किये जानेवाले अनुवादों में विशेष महत्व रखता है। उचित शब्द न मिलने पर प्रायः

> ▶ समान शब्द होने पर भी अर्थ में भिन्नता

अनुवादक हिन्दी में क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों और क्षेत्रीय भाषाओं में हिन्दी शब्दों का प्रयोग करता है। कई बार कोई शब्द हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा में समान होने पर भी दोनों भाषाओं में उसका अर्थ अलग-अलग होता है। कई बार किसी शब्द के लिए दूसरी भाषा में उचित शब्द नहीं मिलता। तब उसे अर्थ द्वारा प्रकट करना उचित होता है।

1.3.3.5 वाक्य विन्यास

> ▶ वाक्य विन्यास में भिन्नता

हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के वाक्य विन्यास में कई बार काफी अन्तर होता है। इसलिए अनुवाद करते समय संबंधित भाषा के वाक्य विन्यास की प्रणाली को ही अपनाना चाहिए, अन्यथा भाषा स्वाभाविक नहीं लगेगी। यह बात दोनों भाषाओं में लंबे-चौडे मिश्र वाक्य के मामले में विशेष महत्व रखती है।

1.3.3.6 व्याकरण का सटीक ज्ञान

> ▶ व्याकरण का सूक्ष्म ज्ञान होना

अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के व्याकरण का सटीक और तुलनात्मक ज्ञान बडा महत्व रखता है। लिंग, वचन और विभक्ति का सही रूप में तभी प्रयोग किया जा सकता है, जब व्याकरण का सूक्ष्म ज्ञान हो।

1.3.3.7 शब्दावली की समानता

> ▶ समान शब्दावली की कमी

अनुवाद करते समय स्रोत भाषा के किसी शब्द के लिए अपनाया गया लक्ष्य भाषा का शब्द संपूर्ण अनुवाद में यथावत प्रयुक्त किया जाना चाहिए। स्रोत भाषा के एक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में अलग-अलग शब्द अपनाना उचित नहीं होगा। खेद की बात यह है कि हिन्-दी-भाषी राज्यों में समान शब्दावली नहीं है। अलग-अलग राज्यों ने एक ही अंग्रेजी शब्द के लिए अलग-अलग हिन्दी शब्द अपनाये जाते हैं।

> ▶ अनुवादक का कार्य लेखक से अधिक कठिन होता है

कुल मिलाकर अनुवाद में प्रवाह, सरलता, स्पष्टता, विषयानुरूप शैली और शब्दावली पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अनुवाद करते समय मूल की भावाभिव्यक्ति हो, वह पढने में मौलिक सा लगे, वह मूल लेखक का समकालीन लगे और इन बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है कि उसमें मूल कृति की शैली प्रतिबिंबित हो।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अनुवाद की समस्या द्विभाषिकीय है। इसके लिए उन दो भाषाओं का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है, जिससे और जिसमें अनुवाद होता है। यह समस्या मूलतः द्विभाषिए की है। तात्पर्य यह है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं पर इतना ज़बरदस्त अधिकार होना चाहिए कि वह दोनों पक्षों का ठीक-ठीक ज्ञान रखते हुए संबोधित कर सके और समझा सके। अनुवाद शैली से विजातीय भाषा को सीखकर मनुष्य धीरे-धीरे वह स्वभाव अर्जित करता है और अभ्यास बन जाने पर वह कभी-कभी अपने आपको दो नावों पर सवार अनुभव करता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अनुवाद की अवधारणाओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
2. अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
3. अनुवादक और लेखक में क्या अंतर है? समझाइए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कलाः कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

अनुवादक

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- एक अच्छे अनुवादक के गुणों को समझता है
- एक द्विभाषिए के गुणों से अवगत होता है
- अनुवादक और द्विभाषिए के बीच के अंतर को समझता है
- अनुवाद की आवश्यकता और वर्तमान विश्व में अनुवाद के महत्व से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

अनुवाद एक अत्यंत कठिन दायित्व है। रचनाकार किसी एक भाषा में सर्जना करता है, जबकि अनुवादक को एक ही समय में दो भिन्न भाषाओं, परिवेश या वातावरण को साधना होता है। प्रत्येक विषय की अपनी भाषा होती है और उसके खास पारिभाषिक शब्द भी होते हैं जिनका बारीक ज्ञान उस विषय के जानकार को ही होता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अनुवादक, द्विभाषिए, भावात्मक एकता, शब्दकोश

Discussion / चर्चा

हम सभी जानते हैं, अनुवाद (Translation) करने वाले को अनुवादक (Translator) कहते हैं। अनुवादक स्त्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है और ऐसा करते समय उसे अत्यंत सावधानी रखना जरूरी होता है।

1.4.1 एक अच्छे अनुवादक के गुण

1. अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।
2. अनुवादक के पास अच्छे शब्दकोश होने चाहिए। यदि प्रशासनिक/तकनीकी सामग्री का अनुवाद करना है तो उसके पास विषय विशेष से संबंधित (तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली आयोग आदि द्वारा प्रकाशित) आधिकारिक शब्दावली/शब्दकोश होना चाहिए। अतः अनुवादक को उपयोगी शब्दकोशों/शब्दावलियों का संग्रह तैयार कर लेना चाहिए।

3. अनुवादक को शब्दकोशों से आवश्यकतानुसार सटीक शब्दों का चयन करने में आलस्य नहीं करना चाहिए।
4. यदि आवश्यक हो तो अनुवाद की जाने वाली सामग्री के किन्हीं शब्दों/अभिव्यक्तियों आदि के बारे में संबंधित विषय के जानकार से चर्चा कर लेनी चाहिए।
5. तकनीकी/प्रशासनिक सामग्री के अनुवाद में विषयवस्तु के संबंध में विषय विशेषज्ञ से बेहतर ज्ञान अनुवादक को नहीं हो सकता। इसलिए विषय विशेषज्ञ की विशेषज्ञता का उसे लाभ अवश्य उठाना चाहिए।
6. अनुवादक में अहं या अति-आत्मविश्वास का भाव नहीं होना चाहिए। अनुवादक दो भाषाओं रूपी किनारों को जोड़ने के लिए सेतु तैयार करने वाला इंजीनियर होता है। अनुवादक की कुशलता/सफलता, सेतु की मज़बूती या कमजोरी पर निर्भर करती है।
7. अनुवादक को बहुआयामी ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए अलग-अलग विषयों की महत्वपूर्ण सामग्रियों का अध्ययन करते हुए ज्ञानार्जन करते रहना चाहिए।
8. साहित्यिक कृति का अनुवाद करने वाले अनुवादक को निरंतर मूल रचनाकार के सम्पर्क में रहकर उसकी संतुष्टि के अनुसार अनुवाद करना चाहिए। क्योंकि मूल भावों के धरातल का ज्ञान मूल रचनाकार से बेहतर किसी को नहीं हो सकता।
9. अनुवादक को अलग-अलग विषयों/विषय वस्तुओं का अनुवाद करने वाले अन्य अनुवादकों से मित्रवत संबंध स्थापित करना चाहिए। ताकि आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे का मार्गदर्शन कर सके।

▶ अनुवादक को बहुआयामी ज्ञान होना अनिवार्य है

10. अनुवादक को अनुवाद कार्य करते समय गौरव का अनुभव होना चाहिए क्योंकि उसे दो भाषाओं के लोगों को जोड़ने वाले सेतु का निर्माण करने का दायित्व सौंपा गया है।
11. अनुवादक लक्ष्य भाषा के पाठक को ध्यान में रखकर शब्दों/भाषा का प्रयोग करता है।

1.4.2 एक द्विभाषिए के गुण

द्विभाषिए ज्यादातर धाराप्रवाह बोलने वाले या सक्रिय और निष्क्रिय दोनों भाषाओं के हस्ताक्षर कर्ता होते हैं। क्योंकि वे उन लोगों के बीच आगे-पीछे संवाद करते हैं, जो एक-दूसरे की भाषा साझा नहीं करते हैं। द्विभाषिया के तौर पर काम करना भी अनुवाद के अंतर्गत ही आता है, पर इसके आयाम अलग होते हैं। किसी भी कार्य को संतुलित रूप से चलाने के लिए एक दक्ष द्विभाषिए की आवश्यकता होती है। यह तब अधिक जरूरी होता है, जब आयोजन उच्चस्तरीय भाषा के संवाद में हो।

▶ दोनों भाषाओं के हस्ताक्षर कर्ता

द्विभाषिया एक मध्यस्थ की तरह काम करता है और वह एक व्यक्ति की बात को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है। मशीनी भाषा ऐसे कार्य के लिए उपयुक्त नहीं है। द्विभाषिया का काम मशीनी अनुवाद से एकदम अलग होता है। शैक्षिक क्षेत्र में द्विभाषिया और अनुवादक दोनों की आवश्यकता पड़ती है। दो अलग-अलग देशों के राष्ट्राध्यक्ष जब बात करते हैं और उनके सामने भाषा की समस्या आती है, ऐसे में एक द्विभाषिया ही इस समस्या का हल निकाल सकता है। अधिकांश राष्ट्राध्यक्षों की बातचीत द्विभाषीयों के माध्यम से ही होती है। वह एक भाषा को समझ कर दूसरी भाषा में उसी क्षण प्रस्तुत करता है।

▶ एक मध्यस्थ की तरह काम करना

1.4.3 अनुवादक और द्विभाषिए में अंतर

व्याख्याकार और अनुवादक के कार्य एक हद तक समान होते हैं, क्योंकि वे एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं। फिर भी उन दोनों के कार्य में अंतर पाये जाते हैं। सबसे

बड़ा अंतर यह है कि व्याख्याकार बोले गये शब्द और बोली जाने वाली भाषा का अनुवाद करते हैं और अनुवादक लिखित सामग्री का अनुवाद करते हैं। इन दोनों के बीच जो मुख्य अंतर हैं, वे निम्नलिखित हैं:-

- अनुवादक अक्सर स्वतंत्र रूप से काम करते हैं।
- अनुवादक लिखित शब्दों का अनुवाद करते हैं - बोलचाल वाले शब्दों का नहीं।
- अनुवादकों को मौके पर काम करने की जरूरत नहीं है; वे भाषण के अपने संदर्भों को संदर्भित करने के लिए अपना समय ले सकते हैं।
- द्विभाषियों को शब्दों वाक्यांशों, और एक पल की सूचना पर बोलचाल की भाषा का अनुवाद करना होगा।
- द्विभाषिए मौखिक भाषा के साथ काम करते हैं (अपने लिखित रूप में भाषा के विपरीत)।
- द्विभाषिए उन लोगों के साथ मिलकर काम करते हैं, जिनके लिए वे अनुवाद कर रहे हैं और अक्सर व्यक्तिगत स्तर पर ग्राहकों के साथ बातचीत करते हैं।

- अनुवादक और द्विभाषिए के बीच मुख्य अंतर भाषा के अनुवाद का तरीका है

1.4.4 अनुवाद की आवश्यकता और वर्तमान विश्व में अनुवाद का महत्व

21वीं शताब्दी के मौजूदा दौर में अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के जन-समुदायों के बीच अंतः संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद का बहुआयामी प्रयोजन सर्वविदित है। यदि आज के इस युग को 'अनुवाद का युग' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की उपादेयता को सहज ही सिद्ध किया जा सकता है। धर्म-दर्शन, साहित्य-शिक्षा, विज्ञान-तकनीकी, वाणिज्य-व्यवसाय, राजनीति-कूटनीति आदि सभी क्षेत्रों से अनुवाद का अभिन्न संबंध रहा है। अतः चिंतन और व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर आज मनुष्य अनुवाद पर आश्रित है। इतना ही नहीं विश्व-संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनताओं के बीच अंतः संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में, उनके बीच भावात्मक एकता को कायम रखने में, देश-विदेश के नवीन ज्ञान-विज्ञान, शोध-चिंतन को दुनिया के हर कोने तक ही नहीं, आम जनता तक भी पहुँचाने में तथा दो भिन्न संस्कृतियों को नज़दीक लाकर एक सूत्र में पिरोने में अनुवाद की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

- अनुवाद का कार्य बहुआयामी है

अनुवाद आज के व्यावसायिक युग की अपेक्षा ही नहीं, अनिवार्यता भी बन गया है। यह एक सेतु है-सांस्कृतिक सेतु। सांस्कृतिक एकता, परस्पर आदान-प्रदान तथा 'विश्वकुटुम्बकम्' के स्वप्न को साकार करने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका उल्लेखनीय है। इस प्रकार वर्तमान युग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नहीं है। वह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय संहति और ऐक्य का माध्यम है, जो भाषायी सीमाओं को पार करके भारतीय चिन्तन और साहित्य की सर्जनात्मक चेतना की समरूपता के साथ-साथ, वर्तमान तकनीकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्ति कर हमारे ज्ञान-विज्ञान के आयामों को देश-विदेश में संपृक्त करता है।

- अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है

दूसरे शब्दों में, अनुवाद विश्व-संस्कृति, विश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक सेतु है। इसके माध्यम से विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकल कर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सशस्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

- अनुवाद की सीमा अनंत है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अनुवादक अर्थात एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में कहने वाला या संप्रेषित करने वाला। दरअसल अनुवादक एक सेतु है, जो दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो सभ्यताओं को आपस में जोड़ने का काम करता है। जिन लोगों को दो या तीन भाषाओं की अच्छी जानकारी होती है, वे अनुवादक के रूप में अच्छा करियर बना सकते हैं। आज भूमंडलीकरण के इस दौर में अनुवादकों की माँग बहुत तेज़ी से बढ़ रही है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. एक अच्छे अनुवादक के गुणों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
2. एक द्विभाषिए के गुणों पर आलेख तैयार कीजिए।
3. अनुवादक और द्विभाषिए में क्या अंतर है?
4. अनुवाद की आवश्यकता और वर्तमान विश्व में अनुवाद के महत्व पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कला: कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

अनुवाद का अभ्यास
(Practice of translation)

BLOCK-02

Block Content

Unit 1 : हिन्दी से मलयालम और अंग्रेजी में अनुवाद

Unit 2 : मलयालम से हिन्दी में अनुवाद

Unit 3 : अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

Unit 4 : सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद-कहानी और कविता

इकाई : 1

हिन्दी से मलयालम और अंग्रेज़ी में अनुवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी अनुच्छेदों का मलयालम में अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है
- हिन्दी अनुच्छेदों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है
- स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते वक्त उठनेवाली समस्याओं से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। विभिन्न आधारों पर अनुवाद के भी विभिन्न प्रकार पाये जाते हैं, जैसे गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, व्याख्यानुवाद आदि। किसी भी प्रकार के अनुवाद में संलग्न होने के लिए अनुवादक में कुछ गुणों का होना नितांत आवश्यक है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, भावानुवाद

Discussion / चर्चा

यह एक निर्विवाद सत्य है कि अनुवाद विज्ञान भी है, शिल्प भी है और कला भी। अच्छे अनुवादक के लिए यह नितांत आवश्यक है कि उसे स्रोत भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो, और लक्ष्य भाषा का विषय के अनुरूप समुचित ज्ञान हो। योग्यता तथा अभ्यास से व्यक्ति अनुवाद की कला में माहिर हो सकता है और इसी बात को मद्देनज़र रखते हुए कुछ अनुच्छेदों का अनुवाद किया जाना ज़रूरी है। अभ्यास के तौर पर यहाँ हिन्दी से मलयालम में अनुवाद करने के लिए पाँच अनुच्छेद दिये गये हैं और हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद के लिए भी पाँच अनुच्छेद दिये गये हैं। नमूने के तौर पर प्रथम अनुच्छेद का अनुवाद किया गया है।

हिन्दी से मलयालम में अनुवाद

1

प्रत्येक राष्ट्र के स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ उसकी कुछ स्वतंत्र विशेषताएँ होती हैं, जिनके

आधार पर उसकी राष्ट्रीयता का निर्माण होता है। प्रत्येक राष्ट्र का एक राष्ट्रीय ध्वज होता है, एक राष्ट्रीय चिह्न और एक राष्ट्रभाषा। भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। इसके साथ ही एक और शब्द राजभाषा व्यवहृत होता रहा है, जिसका अर्थ है- भारत के विभिन्न राज्यों में सामान्य सम्पर्क की ऐसी भाषा- जो केन्द्र और राज्यों में तथा एक राज्य और दूसरे राज्य में सम्पर्क का माध्यम बनी रहे। एक ऐसी भाषा की आवश्यकता इसलिए है कि इससे प्रशासनिक कार्यों में सुविधा होगी और राष्ट्रीय स्तर पर भावात्मक एकता का निर्माण होगा। राज्यों में विद्यमान भाषायी अजनबीपन मिट कर एकत्व का प्रावधान सम्भव हो सकता है। भारत, भाषा की दृष्टि से बहुभाषा-भाषी राष्ट्र है। यहाँ इसके विभिन्न राज्यों में विभिन्न भाषायें बोली जाती है। विभिन्न भाषाओं के प्रयोग में होने से जो विभेद की स्थिति उत्पन्न होती है और राज्यों के मध्य सम्पर्क में जो कठिनाई होती है, उसे एक सामान्य-सर्वमान्य राजभाषा द्वारा दूर किया जा सकता है। उस भाषा के सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग से विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ भारत राष्ट्रीय एकता में बंधा रहेगा। प्रशासनिक कार्यों में केन्द्र और राज्यों को विशेष सुविधा भी रहेगी। यही दृष्टि एक राजभाषा या राष्ट्रभाषा की संरचना के मूल में रहती है।

ഓരോ രാഷ്ട്രത്തിനും സ്വതന്ത്ര അസ്തിത്വത്തോടൊപ്പം ചില സവിശേഷതകളുമുണ്ട്. അതിന്റെ അടിസ്ഥാനത്തിലാണ് ദേശീയത രൂപപ്പെടുന്നത്. ഓരോ രാജ്യത്തിനും, ദേശീയ പതാകയും, ദേശീയ ചിഹ്നവും ദേശീയ ഭാഷയുമുണ്ട്.

ഇന്ത്യൻഭരണഘടന പ്രകാരം ഹിന്ദി ഇന്ത്യയുടെ ദേശീയ ഭാഷയും, ഔദ്യോഗിക ഭാഷയുമാണ്. ഇന്ത്യയിലെ വിവിധ സംസ്ഥാനങ്ങളും, കേന്ദ്രവും സംസ്ഥാനങ്ങളുമായുള്ള ആശയവിനിമയത്തിനായി ഹിന്ദി ഭാഷയെ ഉപയോഗിക്കുന്നു. ഭരണപരമായ പ്രവർത്തനങ്ങൾ സുഗമമാക്കുകയും ദേശീയ തലത്തിൽ വൈകാരിക ഐക്യം സൃഷ്ടിക്കുന്നതിനു വേണ്ടിയാണ് ഇത്തരമൊരു ഭാഷ ആവശ്യമായി വരുന്നത്. സംസ്ഥാനങ്ങളിൽ നിലവിലുള്ള ഭാഷാപരമായ അകൽച്ച തുടച്ചുനീക്കുന്നതിലൂടെ ഐക്യം ഉറപ്പാക്കാനാകും. ഭാഷയുടെ കാര്യത്തിൽ ഇന്ത്യ ഒരു ബഹുഭാഷാ രാഷ്ട്രമാണ്. അതിന്റെ വിവിധ സംസ്ഥാനങ്ങളിൽ വ്യത്യസ്ത ഭാഷകൾ സംസാരിക്കുന്നു. ഈ രീതിയിൽ, വിവിധ ഭാഷകളുടെ ഉപയോഗം മൂലം ഉണ്ടാകുന്ന വിവേചനത്തിന്റെ സാഹചര്യവും സംസ്ഥാനങ്ങൾ തമ്മിലുള്ള സമ്പർക്കത്തിൽ ഉണ്ടാകുന്ന ബുദ്ധിമുട്ടുകളും, ഒരു പൊതു ഔദ്യോഗിക ഭാഷയിലൂടെ നീക്കം ചെയ്യാൻ കഴിയും. ആ ഭാഷ ഒരു സമ്പർക്ക ഭാഷയായി ഉപയോഗിക്കുന്നതിലൂടെ, വിവിധ സംസ്ഥാനങ്ങളായി വിഭജിച്ചിരിക്കുന്ന ഇന്ത്യയിൽ ഒരു ദേശീയ ഐക്യം രൂപീകരിക്കാനാകും. കേന്ദ്രത്തിനും സംസ്ഥാനങ്ങൾക്കും ഭരണപരമായ പ്രവർത്തനങ്ങളിൽ പ്രത്യേക സൗകര്യവും ലഭിക്കും. ഈ കാഴ്ചപ്പാടാണ് ഒരു ഔദ്യോഗിക ഭാഷയുടെയോ ദേശീയ ഭാഷയുടെയോ രൂപഘടനയുടെ കാതൽ.

2

'अनुशासन' अर्थात शासन या नियमानुकूल आचरण। अतः साधारण अर्थों में अनुशासन का अभिप्राय किसी आदेश का, व्यवस्था या प्रबन्ध का, विधान या नियम का विधिवत पालन है। इस पालन में जितनी अधिक तत्परता, स्फूर्ति, तन्मयता, कर्मठता आदि का परिचय मिलेगा

उतना अधिक अनुशासन को आदर्श तथा उत्तम समझा जायेगा। ऐसे अनुशासन को जिसमें अनुशासित का केवल तन ही नहीं मन का भी सहर्ष योग हो, सच्चा अनुशासन कहा जायेगा। वास्तव में व्यक्ति किसी भी व्यवस्था में, विधान में तभी पूर्ण शक्ति और वेग के साथ कार्य कर सकता है जबकि उसके मन का विश्वास साथ हो। मन की शक्ति तन से कहीं अधिक होती है। मनुष्य के मन का यह जीवट और साहस ही है जो दहाड़ते सिंहों और चिंघाड़ते हाथियों को वश में कर सका है न कि तन और उसकी शक्ति। शेरों के साथ खेलने वाले शकुन्तला के पुत्र भरत का समय चला गया। मनुष्य की शारीरिक शक्ति भले ही क्षीण हो गई हो किन्तु मन के साहस का आज भी कोई अन्त नहीं। अतएव अनुशासन का विश्वास रूप वही होगा जहाँ तन के साथ मन को भी साधा गया हो। व्यक्ति स्तर पर ही नहीं समाज, देश और राष्ट्रीयता के स्तर पर भी यह साधना परमावश्यक है। इसके बिना प्रगति और विकास सम्भव ही नहीं।

3

खेलों का महत्व सर्वविदित है। प्रायः समझा जाता है कि खेल व्यायाम का एक सुखद एवं मनोरंजक अंग है और उनसे व्यक्ति की शीरीरिक शक्ति बढ़ती है। परन्तु वास्तव में खेल स्वास्थ्य और शारीरिक विकास में सहायक होते हैं। उनसे व्यक्ति का मानसिक और बौद्धिक विकास भी होता है। खेलों के इसी महत्व को स्वीकार करते हुए उन्हें शिक्षा का अभिन्न अंग बना दिया गया है। यह उक्ति कि वाटरलू का युद्ध ईटन के खेल मैदान में जीता गया, इसी ओर संकेत करती है कि खेल के मैदान में व्यक्ति अनेक गुणों अनुशासन, सहयोग-भावना, योजनाबद्ध कार्य करने की क्षमता, धैर्य, सहिष्णुता आदि को आर्जित करता है। अतः अब सभी मानते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास में खेलों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है और सभी देश खेलों को लोकप्रिय बनाने तथा उनके लिए आवश्यक सुविधाएँ जुटाने में जी-जान से लगे हुए हैं।

खेलों का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। जहाँ ऐतिहासिक दस्तावेजों से पता चलता है कि सर्वप्रथम यूनान के नगर-राज्य एथेन्स मे 776 ई. पू में ओलम्पिया पर्वत पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यूनान में ज्युअस ओलम्पिक वहाँ का राष्ट्रीय देवता है। यूनानी लोग आरम्भ में बहुदेवोपासक थे और अपने देवताओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उत्सवों का आयोजन किया करते थे। इसी प्रथा के अनुरूप वे ओलम्पिया पर्वत पर खेलों का आयोजन करते थे।

4

स्वतंत्र प्रेस या प्रस की स्वतन्त्रता से वास्तविक अभिप्राय है- अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता। प्रेस शब्द यहाँ मूलतः समाचार-पत्रों का पर्याय एवं द्योतक है। समाचार-पत्र अपनी मूल नैतिकता में वही कहते और छापते हैं जो किसी युग या देश-विशेष की जनता की सामूहिक या बहुमत की भावना, इच्छा-आकांक्षा और माँग हुआ करती है। प्रेस ही वह माध्यम है जिससे जनता अपनी जागरूकता का परिचय देकर निर्वाचित सरकार और उसकी निरंकुशता पर अपना अंकुश लगाए रख सकती है। देश की सही स्थिति का, इच्छा-आकांक्षा का पता सरकार को देकर उसे तदर्थ उचित कार्य करने केलिए अनुप्रेरित एवं सतत यत्नशील रख सकती है। प्रेस की स्वतंत्रता के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता वस्तुतः जनतांत्रिक देशों में प्रेस का विशेष

महत्व समझा जाता है, जबकि तानाशाही, एकतन्त्र और कुछ विशिष्ट रीति-नीतियों वाले देशों में प्रेस के कण्ठ पर हमेशा शासक वर्ग की अंगुली रहा करती है, जिसे स्वतन्त्रता के बुनियादी अधिकार को मान्यता देनेवाला कोई भी राष्ट्र या व्यक्ति अच्छा नहीं मानता। प्रेस पर अंकुश तानाशाही प्रवृत्तियों का द्योतक और पोषक ही माना जा सकता है।

5

मानव-जीवन के स्थायित्व एवं सुख-समृद्धि के साथ-साथ सुरक्षा के लिए भी वन-प्रकृति की अमूल्य देन है। इसी कारण जब अनेकविध मानव सम्पदाओं की गणना की जाती है, तो वन-सम्पदा का महत्व असन्दिग्ध रूप से स्वीकारा जाता है। प्रकृति के सुकुमार पुत्र वृक्ष अपनी सामूहिक अवस्थिति से वनों की रूप-रचना और निर्माण करते हैं। वृक्ष जलाने के लिए लकड़ी, छाया, फल-फूल और अनेक प्रकार की औषधियाँ मानव-कल्याणार्थ प्रदान करते ही हैं, वे उस वर्षा का कारण भी हैं, जो खेती-बाड़ी, वनस्पतियों के लिए परम आवश्यक है, ऋतु-क्रम के अनुसार अनेकविध रोगों और महामारियों से न केवल मानव, बल्कि जड़-चेतन प्राणीमात्र एवं पदार्थों की रक्षा भी करते हैं। वर्षा और हिमपात के कारण होने वाले भू-क्षरण से सम्भावित विनाश से बचाव भी वृक्षों वनों द्वारा ही सम्भव हुआ करता है। यों भी प्रकृति के ये सुकुमार पुत्र शान्ति और सौन्दर्य प्रदान करने में अजोड़ है। मानव-मात्र का पालन-पोषण, सुख-शांति का आयोजन, रसान्वति आदि तो वन-सम्पदा से सम्भव होती ही है और समस्त प्रमुख जातियों-उपजातियों के मानवेतर प्राणियों का तो आधार ही सघन तथा हरे-भरे वन ही हैं।

हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद

1

बच्चे को जितने भी उपहार हम दे सकते हैं, उनमें पुस्तकों से बढ़कर और कोई भी उपहार उत्तम नहीं होता। पुस्तकों से बढ़कर अन्य कोई भी उपहार उसके वर्तमान और भविष्य की सुख संतुष्टि में उतना सहायक नहीं हो सकता। वस्तुतः यह अभिप्राय पुस्तकों से नहीं, बल्कि पुस्तक पढ़ने की आदत से संबंधित है। अगर बच्चे में पढ़ने की आदत डाल दी जाए तो वह आजीवन आपका आभारी रहेगा। पुस्तकों को बच्चे की रोज़मर्रा की जिंदगी का साथी होनी चाहिए, और उन्हें स्कूली शिक्षा से अलग रखना चाहिए। उन्हें यह आभास नहीं होने देना चाहिए कि पुस्तकें पढ़ना कोई स्कूल से दिया गया पाठ है। इस बात पर बल देने की आवश्यकता है कि पढ़ना उसे मनोरंजक लगे और वह यह महसूस करे कि इसके द्वारा उसके समय का सदुपयोग हो रहा है। तुम्हें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि पढ़ना उसको रुचिकर लगे और वह उसके जीवन का बहुमूल्य अंग बन जाए।

Among all other gifts, books are the best gifts which we can give to the children. No other thing can give present and future happiness and make life prosperous in every point of view. Actually here the intention is not about books, but the reading habit among the children. It is the best thing for which he will be thankful to you forever. Books should be daily companions of a child and it should not be linked with school education. You should not create the idea that reading is homework or a lesson given from the school. It is necessary to stress on the fact that he feels funny or interesting and realizes that because of reading he is spending his time in a better way. You have to make reading an interesting thing for him and it

should become a valuable part of his life. Actually it is not at all a difficult thing.

2

स्वयं को शक्तिशाली बनाना ही हमारा प्रथम गणनीय एवं मुख्य कार्य है। निःसन्देह हमारा प्रधान एवं महत्वपूर्ण काम गरीबी और बेकारी को दूर करना है। क्योंकि ऐसा न करने पर हम कमज़ोर हो जायेंगे तथा सब प्रकार की विषमताओ में पड़ जाएँगे। अपने को शक्तिशाली बनाना ही आज सबसे ज़रूरी है। नई विपत्तियाँ सिर उठा रही हैं। क्षितिज पर हम उन्हें देख सकते हैं। लेकिन इस पर डरने की कोई कारण नहीं है। ऐसा होने पर भी हम आत्मसंतुष्ट न रहें और विपत्तियों का सामना करने के लिए सदा सन्नद्ध एवं सावधान रहें। हम बेचैन न हो जाएँ और कभी दूसरों के आगे सहायता की भीख माँगने के लिए हाथ न फैलाएँ। हमको अपने में अधिक आत्मविश्वास, शक्ति एवं एकता की भावना का निर्माण करना चाहिए। एक नव भारत का निर्माण करेंगे, पर यह भी बहुत जरूरी है कि हमें निर्माण शीघ्र करने के लिए कदम उठाना होगा। ऐसा न करने पर हम में दुर्बलता आ जायेगी और आशंका जनक स्थितियों की वृद्धि भी होगी। तुम्हें इस संदेश को फैलाना और कार्यान्वित करना होगा।

3

उषाकाल में उठने का लाभ यह है कि उससे हमारे दिन के काम की अच्छी शुरुआत होती है। जो दूसरों की अपेक्षा पहले ही बिस्तर छोड़ देता है, वह अपना कठिन काम पूरा कर सकता है। सबेरे मस्तिष्क ताजा रहता है और निःशब्दता होने के कारण काम ध्यान से किया जा सकता है। पहले जागनेवाला प्रभातकालीन शुद्ध वायु में थोड़ा सा व्यायाम भी कर सकता है। यह व्यायाम उसे शाम तक के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है। अपना काम पहले ही शुरू करनेवाला यह जानता है कि उसके पास उससे अपेक्षित कार्य निपटाने के लिए पर्याप्त समय रहता है। और इसलिए वह अपने काम का कोई भी हिस्सा जल्दी-जल्दी करने के लिए उत्सुक होता नहीं है। निश्चित समय पर सोने के लिए जाने के पहले शाम को उसके पास विश्राम करने के लिए काफी समय रहता है क्योंकि उसका सारा काम समय पर किया गया है। आधी रात के पहले के घंटों में गाढ़ी निद्रा मिलने से उसको दूसरे दिन के काम के लिए अधिक ताज़गी एवं उद्यम के लिए उत्साह युक्त स्फूर्ति मिलती है।

4

भारत में कृषि के विकास के साथ-साथ औद्योगीकरण की आवश्यकता है। प्रथम गणनीय बात यह है कि अगर खेती से प्राप्त उत्पादों की आकृति में परिवर्तन नहीं करेंगे तो वे उपयोगी सिद्ध न होंगे। आजकल ये चीजें विदेशों में भेजी जाती हैं और उनकी आकृति बदली जाती है जिससे वहाँ के मजदूरों को लाभ पहुँचता है। जो कृषि के कामों में लगे रहते हैं वे साल भर काम नहीं करते। एक साल में कम से कम चार महीने वे व्यवहारिक रूप से बेकार रहते हैं। दूसरी बात यह है कि लोगों की आवश्यकताओं में वृद्धि होती रहती है। इसे पूरा करने के लिए हमें दूसरे देशों पर निर्भर होना पड़ता है या अपने देश में उत्पादन करना पड़ता है। यही अधिक अच्छा रहेगा कि हम उन चीज़ों का उत्पादन अपने देश में ही करें, जिससे देश का धन यहीं रहे। तीसरी बात यह है कि हमारा राष्ट्रीय आय बहुत कम है। इसलिए देश की

गरीबी हटाने के लिए औद्योगीकरण नितान्त आवश्यक है।

5

साधारणतया भूमि, श्रम और पूँजी उत्पादन के साधन समझे जाते हैं। भूमि से तात्पर्य मनुष्य की सहायता के लिए निर्बाध रूप से प्रकृति से प्राप्त होनेवाली ज़मीन, जल, वायु, प्रकाश और ताप जैसी वस्तुओं और शक्तियों से है। पूंजी से तात्पर्य समस्त संग्रहित सामग्री से है तथा साधारण रूप से जिसे आंशिक आय गिना जाता है उससे प्राप्त प्रयोजनों से है। यही मुख्य धन है जिसे अपनी आवश्यकता की पूर्ति के प्रत्यक्ष स्रोत बनकर उत्पादन का एजेंट माना जाता है। पूँजी में अधिकांश ज्ञान और संगठन भी जुड़ा रहता है। इसमें कुछ अंश निजी संपत्ति का रहता है। ज्ञान उत्पादन का शक्तिशाली साधन है। यह प्रकृति को अधीन करने तथा उसके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने को बाध्य करने के लिए सहायता करता है। संगठन ज्ञान प्राप्ति में सहायक बनता है। उसके कई तरीके हैं। इकहरा व्यवसाय, एक ही व्यापार के विभिन्न व्यवसाय और विभिन्न परस्पराश्रित व्यापार इसके उदाहरण हैं। राज्य की ओर से इन सबको हर प्रकार की सुरक्षा और सहायता मिल जाती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

सामान्यतः स्रोत भाषा में अभिव्यक्ति पक्ष तथा अर्थ पक्ष के तालमेल को ठीक उसी रूप में लक्ष्य भाषा में भी ला-पाना सर्वदा संभव नही होता। वास्तविकता यह है कि दोनों भाषाओं में इस प्रकार के तालमेल की समानता हमेशा होता ही नहीं। अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी से अपनी मातृभाषा में अनुवाद करते समय आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कलाः कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुभव सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

मलयालम से हिन्दी में अनुवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मलयालम अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है
- मलयालम और हिन्दी की भाषा-शैली एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है
- अनुवाद करते समय उपस्थित समस्या की जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रायः स्रोत भाषा की सामग्री और उनके अनुवाद स्वरूप प्राप्त लक्ष्य भाषा में सामग्री, ये दोनों अभिव्यक्ति तथा अर्थ के स्तर पर प्रायः एक समान नहीं होती। अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है। वे केवल एक दूसरे के मात्र निकट होती हैं। हाँ, समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, भावानुवाद

Discussion / चर्चा

ഒരു അന്ധനായ ബാലന്റെ കഥയാണ് കളർ ഓഫ് പാരഡൈസ്. സ്പെഷൽ സ്കൂൾ വിദ്യാർഥിയായ മുഹമ്മദിനെ കൂട്ടിക്കൊണ്ടുപോകാൻ അച്ഛൻ വന്നില്ല. ഏറെ നേരത്തെ കാത്തിരിപ്പിനുശേഷം എത്തിയ അച്ഛൻ അവനെ തുടർന്ന് സ്കൂളിൽ താമസിപ്പിക്കണമെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്ററോട് ആവശ്യപ്പെടുന്നു. വെക്കേഷനിൽ കുട്ടികളെ സ്കൂളിൽ പാർപ്പിക്കാൻ കഴിയില്ലെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്റർ അറിയിച്ചപ്പോൾ അയാൾ നിരാശനായി. മകനെയും കൊണ്ട് സ്വന്തം ഗ്രാമത്തിലെത്തുന്നു. മുഹമ്മദിന്റെ സാന്നിധ്യം അനുജത്തിമാരെയും മുത്തശ്ശിയെയും ആവേശം കൊള്ളിച്ചു. ഗന്ധവും സ്പർശവുംകൊണ്ട് തന്റെ ഗ്രാമത്തിന്റെ മനോഹാരിത മുഹമ്മദ് അനുഭവിക്കുകയാണ്. അവൻ അനുജത്തിയോടൊപ്പം അവളുടെ സ്കൂളിൽ ചെന്നു. അധ്യാപകൻ അവനെ അതിഥിയായി സ്വീകരിച്ചു. മറ്റു കുട്ടികൾ പാഠം വായിച്ചതിൽ വരുത്തിയ തെറ്റുകൾ മുഹമ്മദ് തിരുത്തി. ബ്രയിൽ ലിപിയിൽ അവൻ എഴുതിവെച്ചിരുന്ന പാഠഭാഗം വായിച്ചുകേൾപ്പിച്ച് അധ്യാപകരെയും കുട്ടികളെയും അമ്പരപ്പിച്ചു. തുടർന്നും ക്ലാസിൽ വര

ണമെന്നു പറഞ്ഞ് അധ്യാപകൻ മുഹമ്മദിനെ അനുമോദിച്ചു.

മുഹമ്മദിന്റെ അച്ഛനായ ഹാഷിം തികച്ചും അസ്വസ്ഥനായിരുന്നു. മുഹമ്മദിന്റെ ജനനത്തോടെ ഭാര്യ നഷ്ടപ്പെട്ട അയാൾ മറ്റൊരു വിവാഹത്തിന് തയ്യാറെടുക്കുകയായിരുന്നു. അന്ധനായ ഒരു മകൻ തനിക്ക് ഉണ്ടെന്നറിഞ്ഞാൽ വിവാഹം മുടങ്ങുമെന്ന് അയാൾ ഭയപ്പെട്ടു. അതുകൊണ്ട് മകനെ മറച്ചു വെക്കാൻ അയാൾ ആഗ്രഹിച്ചു. അതിനായി ഒരു അന്ധൻ നടത്തുന്ന മരപ്പണിശാലയിൽ അപ്രന്റീസായി മുഹമ്മദിനെ ചേർക്കാൻ അയാൾ പദ്ധതിയിട്ടു. മുഹമ്മദിനെ തങ്ങളിൽ നിന്ന് അകറ്റാനുള്ള ശ്രമം അനുജത്തിമാരെയും മുത്തശ്ശിയെയും അസ്വസ്ഥരാക്കി.

അന്ധനായ മരപ്പണിക്കാരന് മുഹമ്മദിന്റെ വികാരങ്ങൾ ഉൾക്കൊള്ളാൻ പ്രയാസമുണ്ടായില്ല. അന്ധരെയാണ് ദൈവം കൂടുതൽ സ്നേഹിക്കുന്നതെന്നും എല്ലായിടത്തും ദൈവത്തിന്റെ സാന്നിധ്യം നിറഞ്ഞിരിക്കുന്നുവെന്നും അവർ വിശ്വസിച്ചു. ശബ്ദങ്ങളിലൂടെയും സ്പർശത്തിലൂടെയും അവർ ലോകത്തെ തിരിച്ചറിഞ്ഞു.

कलर ऑफ़ पैराडाइज़ एक अंधे लड़के की कहानी है। स्पेशल स्कूली छात्र मुहम्मद को लेने उसका पिता नहीं आया। बहुत देर तक इंतजार करने के बाद पहुंचे पिता हेडमास्टर से मुहम्मद को उस स्कूल में ठहराने की मांग करता है। किन्तु हेडमास्टर ने उन्हें बताया कि वे छुट्टी के दौरान बच्चों को स्कूल में नहीं ठहरा सकते, यह सुनकर पिता को निराशा हुई। वह अपने बेटे को लेकर अपने गाँव पहुँचता है। मुहम्मद की उपस्थिति ने उसकी छोटी बहन और दादी को रोमांचित कर दिया। मुहम्मद ने गंध और स्पर्श से अपने गाँव की सुंदरता को महसूस किया। वह अपनी छोटी बहन के साथ उसके स्कूल गया। वहाँ अध्यापक ने उसका अतिथि के रूप में स्वागत किया। पाठ पढ़ते वक्त उसने अन्य बच्चों द्वारा की गई गलतियों को सुधारा। उसने ब्रइल लिपि में लिखे गये पाठ पढ़कर अध्यापकों एवं छात्रों को आश्चर्य चकित किया। ये कक्षा में फिर आते-रहना कहकर अध्यापक ने मुहम्मद की प्रशंसा की।

मुहम्मद का पिता हाशिम काफी परेशान था। मुहम्मद के जन्म के साथ ही अपनी पत्नी को खो देने के बाद, वह दूसरी शादी की तैयारी कर रहा था। अंधे बेटे के बारे में लडकीवालों को पता चलने पर शादी टूट जाने का डर उसमें था। इसलिए वह अपने बेटे को उनसे छुपाना चाहता था। इसके लिए उसने मुहम्मद को एक अंधे व्यक्ति द्वारा संचालित बढ़ईगिरी की दुकान में प्रशिक्षु बनाने की योजना बनाई। मुहम्मद को अपनों से दूर रखने की कोशिश ने उसकी छोटी बहन और दादी को परेशान कर दिया।

अंधे बढ़ई के लिए मुहम्मद की भावनाओं को समझना आसान था। उनका मानना था कि ईश्वर अंधों को अधिक प्यार करता है, और उसकी मौजूदगी हर जगह है। ध्वनियों और स्पर्शों से उन्होंने दुनिया को महसूस किया।

2

സഞ്ചാരസാഹിത്യത്തിന്റെ ആരംഭം തേടിയുള്ള യാത്ര ഒരുപക്ഷേ, നമ്മെ എത്തിക്കുന്നത് ഇതിഹാസങ്ങളിലേക്കാവും. ആദികാവ്യമായ രാമായണത്തിൽ അതിന്റെ മാതൃകകൾ കണ്ടെത്താം. വനവാസത്തിനുവേണ്ടിയുള്ള രാമന്റെ യാത്രയും അപഹരിക്കപ്പെട്ട സീതയെയുംകൊണ്ടുള്ള

രാവണന്റെ വിമാനയാത്രയുമെല്ലാം സഞ്ചാരത്തിന്റെ സാധ്യതകളിലേക്കാണ് നയിക്കുന്നത്. ഹോമറിന്റെ ഇതിഹാസത്തിൽ ട്രോജൻ യുദ്ധം കഴിഞ്ഞ് മടങ്ങുന്ന യുലീസസ്സിന്റെ അതിദീർഘയാത്രയുടെ വർണന കാണാം. രഘുവംശം തുടങ്ങിയ മഹാകാവ്യങ്ങളും യാത്രാവിവരണത്തിനു പ്രാധാന്യമുള്ളവയാണ്. യാത്രയിലെ വിസ്മയകരമായ അനുഭവങ്ങൾക്കു ഭാവനയുടെ നിറം നൽകി ആവിഷ്കരിച്ചുള്ള കഥകളും കുറവല്ല. ഗള്ളിവറുടെ സഞ്ചാരകഥകൾ വിവരിക്കുന്ന ജോനാഥൻ സ്വിഫ്റ്റിന്റെ രചനകൾ ഈ വിഭാഗത്തിൽപ്പെട്ടവയാണ്. ഇന്ത്യ സന്ദർശിച്ച വിദേശസഞ്ചാരികളുടെ കുറിപ്പുകൾ ഇവിടത്തെ ജനജീവിതത്തെയും സംസ്കാരത്തെയും കുറിച്ചുള്ള അപൂർവവിവരങ്ങൾ നൽകുന്നവയാണ്. വ്യാപാരത്തിനും മറ്റുമായി ഇവിടെ എത്തിയ ഇബ്നു ബത്തൂത്ത് തുടങ്ങിയവർ സ്വകാര്യമായി എഴുതി സൂക്ഷിച്ച് കുറിപ്പുകൾ സഞ്ചാരസാഹിത്യമായി പരിഗണിക്കപ്പെടാറില്ലെങ്കിലും വിലപ്പെട്ട ചരിത്ര രേഖകൾതന്നെയാണ്. സംസ്കൃത-മലയാള സാഹിത്യങ്ങളിലുണ്ടായ സന്ദേശകാവ്യങ്ങൾ സ്ഥലവർണനാപ്രധാനങ്ങളാണ്. സന്ദേശഹരൻവഴി പറഞ്ഞുകൊടുക്കുന്ന രീതിയിൽ വിവരിക്കുന്ന സ്ഥലവർണനകളിൽനിന്ന് യാത്രയുടെ ഹൃദ്യമായ ഒരനുഭവം അനുവാചകർക്കു ലഭിക്കുന്നു. കാളിദാസന്റെ മേഘസന്ദേശമാണ് ഇക്കൂട്ടത്തിൽ പ്രഥമഗണനീയം.

3

നിയതമായ ചില ലക്ഷണങ്ങളോടെ രചിക്കപ്പെട്ട ബൃഹത്തായ കാവ്യങ്ങളെയാണ് മഹാകാവ്യങ്ങൾ എന്നു വിളിക്കുന്നത്. സംസ്കൃതാലങ്കാരികന്മാർ മഹാകാവ്യത്തെ സർഗ്ഗങ്ങളായി വിഭജിച്ചിരിക്കുന്നു. ഒരു കാവ്യത്തിൽ സർഗ്ഗങ്ങൾ ഏഴിൽ കുറയരുത്. ഒരു സർഗ്ഗത്തിൽ അമ്പതിൽ കുറയാതെ ശ്ലോകങ്ങൾ ഉണ്ടാവണം. ഓരോ സർഗ്ഗവും ഓരോ വൃത്തത്തിൽ എഴുതണം. സർഗ്ഗത്തിന്റെ അവസാനപദ്യത്തിനു വേണമെങ്കിൽ വൃത്തം വ്യത്യാസപ്പെടുത്താം. സർഗ്ഗങ്ങൾ തമ്മിൽ വിഷയപ്രതിപാദനത്തിൽ ബന്ധപ്പെട്ടിരിക്കണം. മഹത്തായ ഒരു ജീവിതത്തിന്റെ അഥവാ വംശത്തിന്റെ ചരിത്രമായിരിക്കണം വിഷയം. കാവ്യാരംഭത്തിൽ ആശിസ്സ്, നമസ്കാരം, വസ്തുനിർദ്ദേശം എന്നിവ വേണം. ധീരോദാത്തനും സൽകുലജാതനുമാവണം നായകൻ. നായിക മാതൃകാ വനിതയായിരിക്കണം. ശൃംഗാരവീരശാന്തങ്ങളിൽ ഒന്ന് അംഗിയായ രസവും മറ്റുള്ളവ അംഗങ്ങളുമാവണം. നായകന് ഉയർച്ചയുണ്ടാവുന്ന തരത്തിലാവണം കഥ. പുരുഷാർത്ഥ പ്രാപ്തിക്ക് പ്രയോജനപ്പെടുന്ന കഥകൾക്ക് പ്രാമുഖ്യം നല്കണം. നഗരം, ശൈലം, ഋതു, വിവാഹം, യുദ്ധം, അർണ്ണവം, ഉദയം, അസ്തമയം മുതലായവ വർണ്ണിക്കണം എന്നിങ്ങനെ പോകുന്നു ലക്ഷണങ്ങൾ. ദണ്ഡിയുടെ 'കാവ്യാദർശം' എന്ന കൃതിയിൽ നല്കിയ ലക്ഷണങ്ങളാണ് മേൽപറഞ്ഞത്..

4

ഏറ്റവും സമ്പന്നമായ സാഹിത്യശാഖകളിലൊന്നാണ് 'ചെറുകഥ'. 1890-ൽ മലയാളത്തിൽ തുടങ്ങുന്ന ഒന്നേകാൽ ശതാബ്ദക്കാലത്തെ ഈ സാഹിത്യശാഖയുടെ വികാസ പരിണാമങ്ങളെ പലഘട്ടങ്ങളായി തിരിക്കാവുന്നതാണ്. 20-ാം നൂറ്റാണ്ടിലാണ് മലയാള ചെറുകഥാസാഹിത്യം വികാസഗതി പ്രാപിച്ചത്. 19-ാം നൂറ്റാണ്ടിന്റെ

അവസാനദശയിൽ പ്രാരംഭം കുറിച്ചെങ്കിലും 1930 മുതലുള്ള കാലഘട്ടം ചെറുകഥാസാഹിത്യത്തിന്റെ ദ്രുതഗതിയിലുള്ള വളർച്ചയ്ക്കു സാക്ഷ്യം വഹിക്കുകയാണുണ്ടായത്. അടുത്ത മുപ്പതുവർഷക്കാലം കൊണ്ട് ചെറുകഥ ഏറെ ജനകീയാംഗീകാരം നേടുകയും ഏറ്റവും മികവാർന്ന സാഹിത്യവിഭാഗമായി മാറിക്കഴിയുകയും ചെയ്തു. വേങ്ങയിൽ കുഞ്ഞിരാമൻനായനാർ, മൂർക്കോത്തു കുമാരൻ, ഒടുവിൽ കുഞ്ഞികൃഷ്ണമേനോൻ, അമ്പാടി നാരായണ പൊതുവാൾ, കെ. സുകുമാരൻ, എം. ആർ.കെ.സി., ഇ.വി.കൃഷ്ണപിള്ള തുടങ്ങിയവരിലൂടെയാണ് ചെറുകഥാപ്രസ്ഥാനം മുന്നേറിയത്. കാരൂർ നീലകണ്ഠപ്പിള്ള, പൊൻക്കുന്നം വർക്കി, പി. കേശവദേവ്, തകഴി ശിവശങ്കരപ്പിള്ള, എസ്. കെ. പൊറ്റക്കാട്ട്, ലളിതാംബിക അന്തർജ്ജനം, ഉറൂബ്, കെ. സരസ്വതിയമ്മ എന്നീ കഥാകൃത്തുക്കളുടെ കാലം ചെറുകഥാസാഹിത്യത്തിന്റെ ഉയർന്ന അവസ്ഥയുടേതെന്ന് വിലയിരുത്താം. ഇവരുടേത് യഥാതഥമാണ് എങ്കിൽ തുടർന്ന് വന്നത് എം.ടി. വാസുദേവൻ നായർ, ടി. പത്മനാഭൻ, മാധവിക്കുട്ടി എന്നിവർ തുടങ്ങിവെച്ച ആധുനികതയുടെ കാലഘട്ടമാണ്. ആധുനികത മലയാള ചെറുകഥാ സാഹിത്യത്തിൽ ഒരു പ്രസ്ഥാനമായി പൂർണ്ണത പ്രാപിക്കാൻ പിന്നീടു വന്ന കഥാകാരന്മാരായ ഒ. വി. വിജയൻ, എം. പി. നാരായണപിള്ള, കാക്കനാടൻ, എം. മുകുന്ദൻ, സക്കറിയ, പട്ടത്തുവിള കരുണാകരൻ, എം. സുകുമാരൻ തുടങ്ങിയ നിരവധി പ്രതിഭാധനന്മാരുടെ സംഭാവനകൾക്കു കഴിഞ്ഞു. വർത്തമാന കാലത്തും ഈ ശാഖ ഏറെ സജീവമാണ്.

5

ഒരു കൂട്ടം നിയമങ്ങളാണ് ഭാഷയെ നിയന്ത്രിക്കുന്നത്. ഈ നിയമങ്ങൾ ഭാഷ പറയുന്നയാൾക്കും കേൾക്കുന്നയാൾക്കും ഒരുപോലെ സ്വായത്തമായതിനാൽ പുതിയ വാക്യങ്ങൾ യഥേഷ്ടം സൃഷ്ടിക്കാനും പുതിയ വാക്യങ്ങളിൽനിന്ന് ആശയം ഗ്രഹിക്കാനും കഴിയുന്നു.

ഒരു ഭാഷയിലെ കുറേ ഏറെ പദങ്ങൾ അറിഞ്ഞതുകൊണ്ട് നമുക്ക് ആ ഭാഷ പ്രയോഗിക്കാനാവില്ല. നിഘണ്ടു ഉപയോഗിച്ച് പഠിക്കാവുന്നതല്ല ഭാഷ. പരിമിതമായ പദങ്ങൾ മാത്രം അറിയുന്നൊരാൾക്കും ഭാഷയിലൂടെ എളുപ്പത്തിൽ ആശയവിനിമയം സാധ്യമാവുന്നു. എന്താണ് ഈ വൈരുധ്യത്തിന് അടിസ്ഥാനം? ഭാഷയിലെ പരമപ്രധാനഘടകം വ്യാകരണം തന്നെയാണെന്ന് ഇതിൽനിന്ന് നമുക്ക് മനസ്സിലാക്കാം. നിരന്തരം അസംഖ്യം വാക്യങ്ങൾ ഉത്പാദിപ്പിക്കാൻ കഴിയുന്ന ഭാഷയുടെ സൃഷ്ടിപരത ഇങ്ങനെ ചില നിയമങ്ങളെ ആശ്രയിച്ചിരിക്കുന്നു. ഈ നിയമങ്ങളെയാണ് ഭാഷാശാസ്ത്രജ്ഞന്മാർ വ്യാകരണം എന്നു പറയുന്നത്. ഭാഷ പ്രയോഗിക്കാൻ കഴിയുന്നവരെല്ലാം ഭാഷയെക്കുറിച്ച് ജ്ഞാനമുള്ളവരാണെന്ന് പറയുന്നതിൽ തെറ്റുണ്ടോ? ഭാഷ അറിയാത്ത ഒരാൾക്ക് ഭാഷ പ്രയോഗിക്കാൻ കഴിയില്ലല്ലോ. ഭാഷ അറിയുക എന്നാൽ ഭാഷാനിയമങ്ങൾ അറിയുക എന്നതാണ്. ജ്ഞാനവും ഭാഷാപ്രയോഗവും വ്യത്യസ്തമാണെന്ന അഭിപ്രായമാണ് ഭാഷാ ശാസ്ത്രജ്ഞനായ നോം ചോംസ്കിക്കുള്ളത്. ഒരുഭാഷയെക്കുറിച്ച് അതു സംസാരിക്കുന്ന ജനങ്ങൾക്കുള്ള അറിവാണ് ഭാഷാജ്ഞാനം. ഭാഷയിലൂടെ നടത്തുന്ന എല്ലാ ആശയവിനിമയവും ഭാഷാപ്രയോഗത്തിന്റെ ഭാഗമാണ്. വ്യാകരണനിർമിതിക്ക് ഭാഷാജ്ഞാനത്തെത്തന്നെ ആശ്രയിക്കണമെന്ന അഭിപ്രായമാണ്

ചോംസ്കിക്കുള്ളത്. ഇവിടെ വ്യാകരണം എന്നതുകൊണ്ട് അർഥ മാക്കുന്നത് ഭാഷാനിയമങ്ങൾ പ്രതിപാദിക്കുന്ന ഗ്രന്ഥത്തെയാണ്. അത്തരമൊരു ഗ്രന്ഥം അതിന്റെ ലക്ഷ്യം കൈവരിക്കണമെങ്കിൽ ഭാഷാജ്ഞാനത്തെ അടിസ്ഥാനമാക്കണം. കാരണം ഭാഷാപ്രയോഗത്തിന് ചില പരിമിതികളുണ്ട്. പ്രയോഗം എപ്പോഴും ശരിയായിക്കൊള്ളണമെന്നില്ല.

6

പ്രതിജനഭിന്ന വിചിത്രമാർഗമായ ജീവിതത്തിൽ അനുഭവങ്ങൾ തന്നെയാണ് ഏറ്റവും വലിയ ഗുരു. സ്വന്തം അനുഭവങ്ങളെന്നപോലെ മറ്റുള്ളവരുടെ അനുഭവങ്ങളും നമുക്ക് മാർഗദർശകമാകാറുണ്ട്. അറിവായും കാഴ്ചപ്പാടായുമൊക്കെ നമ്മുടെ മുൻപിലെത്തുന്ന അത്തരം അനുഭവപാഠങ്ങളിൽനിന്നാണ് ജീവിത യാത്രയ്ക്ക് കരുത്തുനേടേണ്ടത്. ആത്മകഥകളും അനുഭവക്കുറിപ്പുകളും ജീവചരിത്രങ്ങളും ഈ വഴിക്ക് നമ്മെ നയിക്കുന്നു. സഹിതഭാവം പുലർത്തുന്നതിനാൽ ഇവയെ സാഹിത്യമെന്നു വിളിക്കാം. ഓട്ടോബയോഗ്രഫി എന്ന ഇംഗ്ലീഷ് പദം മൗഭേ(ലെഹള), യശീ(ഹശളല), ഴൃമുവല(ൃശലേ) എന്നീ ഗ്രീക്കു പദങ്ങൾ ചേർന്നാണ് രൂപപ്പെട്ടിട്ടുള്ളത്. സ്വന്തം ജീവിതത്തെക്കുറിച്ചുള്ള എഴുത്ത് എന്ന് ഇതിനെ സാമാന്യമായി വ്യവഹരിക്കാം. പ്രാചീനകാലം മുതൽ തന്നെ ആത്മകഥകൾ എഴുതപ്പെട്ടിട്ടുണ്ട്. 14-ാംനൂറ്റാണ്ടിൽ ബാബർ എഴുതിയ 'ബാബർനാമ' എന്ന കൃതി ഇതിന് ഉദാഹരണമാണ്. 18-ാം നൂറ്റാണ്ടിൽ ജീവിച്ചിരുന്ന എഡ്വേഡ് ഗിബ്ബൺ, ബെഞ്ചമിൻഫ്രാങ്ക് എന്നിവർ ആത്മകഥാരചനയിലൂടെ ശ്രദ്ധേയരായിത്തീർന്നിരുന്നു. റൂസ്സോയുടെ 'കൺഫെഷൻ' ഏറെ ചർച്ചചെയ്യപ്പെട്ട ആത്മകഥയാണ്. ഗാന്ധിജിയുടെ മൈ എക്സ്പെരിമെന്റ്സ് വിത്ത് ട്രൂത്ത് എക്കാലത്തും പഠിക്കപ്പെടുന്ന ആത്മകഥയാണല്ലോ.

ആത്മകഥകൾപോലെത്തന്നെ അനുഭവക്കുറിപ്പുകളും സാഹിത്യത്തിൽ ഇടംനേടിയിട്ടുണ്ട്. ഇംഗ്ലീഷ് സാഹിത്യത്തിലെ മെമ്മറീസ് എന്ന വിഭാഗത്തിൽ ഏറെയും മറ്റുള്ളവരെക്കുറിച്ചുള്ള അനുസ്മരണങ്ങളാണ്. ജീവിതത്തിന്റെ വിവിധ തുറകളിൽ വ്യക്തിമുദ്ര പതിപ്പിച്ചവരുടെ വേറിട്ട സ്മരണകൾ വായനക്കാരെ എന്നും ആവേശംകൊള്ളിച്ചിരുന്നു. തിക്കോടിയന്റെ 'അരങ്ങുകാണാത്ത നടൻ' ആത്മകഥാരൂപത്തിലുള്ള കൃതിയാണ്. വൈലോപ്പിള്ളി ശ്രീധരമേനോൻ രചിച്ച കാവ്യലോകസ്മരണകളും ഒരർഥത്തിൽ ആത്മകഥതന്നെയാണ്. ഭരത് ഗോപിയുടെ 'നാടകനിയോഗ'ത്തിൽ ഒരു നാടകപ്രവർത്തകന്റെ അനുഭവങ്ങൾ കാണാം. കഥകളിയുൾപ്പെടെയുള്ള കലാരംഗത്തു പ്രവർത്തിച്ചിരുന്ന നിരവധി അനുഗൃഹീത കലാകാരന്മാർ അവരുടെ ജീവിതാനുഭവങ്ങളും കലാനുഭവങ്ങളും അനുവാചകർക്കായി പങ്കുവെച്ചിട്ടുണ്ട്. ഇടശ്ശേരിയുടെ 'തുടികൊട്ടും ചിലമ്പൊലിയും', സുഗതകുമാരിയുടെ 'നോവിക്കല്ലേ' എന്നീ രചനകൾ വേറിട്ട അനുഭവാവിഷ്കാരങ്ങളാണ്. പി. കുഞ്ഞിരാമൻ നായരുടെ 'കവിയുടെ കാൽപാടുകൾ' എന്ന കാവ്യാത്മകമായ ആത്മകഥ രുചിച്ചുശീലിച്ചവർക്ക് ഈ ഒറ്റപ്പെട്ട അനുഭവങ്ങൾ കൂടുതൽ ഉന്മേഷം പകരും.

7

വൈവിധ്യമാർന്ന ജീവിഘടകങ്ങൾ അധിവസിക്കുന്നതാണ് നമ്മുടെ

പ്രകൃതി. പ്രകൃതി വിഭവങ്ങളുടെ സംരക്ഷണവും ഉപഭോഗവും കൂടാതെ ജീവികൾക്കു നിലനില്ക്കാനാവില്ല. സസ്യ, ജന്തു ജാലങ്ങൾ അടങ്ങിയ പരിസ്ഥിതിയിൽ ജീവന്റെ നിലനില്പിനാവശ്യമായ വിഭവങ്ങളും ധാരാളമുണ്ട്. ഈ പ്രകൃതി വിഭവങ്ങളെ വേണ്ടവിധം സംരക്ഷിച്ചില്ലെങ്കിൽ പ്രകൃതിയുടെ സന്തുലനത്തിനു കോട്ടംതട്ടും.

എന്നാൽ ഇന്നു നമ്മുടെ പരിസ്ഥിതി പലവിധത്തിലും മലിനമായിക്കൊണ്ടിരിക്കുകയാണ്. കേരളത്തിൽ മനുഷ്യവാസമായ ഓരോ ഇടവും രൂക്ഷമായ പരിസ്ഥിതി പ്രശ്നങ്ങളുടെ കേന്ദ്രമായി മാറുകയാണ്. നഷ്ടപ്പെട്ടു പോയ ഭൂതകാല നന്മകൾ ഓർത്തു വിലപിക്കാതെ പ്രകൃതി സംരക്ഷണത്തിനും മാലിന്യ നിർമ്മാർജ്ജനത്തിനും ഉതകുന്ന പരിപാടികൾ ആവിഷ്കരിച്ചു നടപ്പിലാക്കുക എന്നതാണു പ്രധാനം. പരിസ്ഥിതി മലിനീകരണത്തിന്റെ ഏറ്റവും രൂക്ഷമായ വശം നമ്മുടെ മാലിന്യങ്ങളുടെ കൂമ്പാരമാണ്. മാലിന്യങ്ങളും വിസർജ്യങ്ങളും നാട്ടിൽ ഉണ്ടാകുക സ്വാഭാവികം. എന്നാൽ അവയെ വേണ്ടവിധത്തിൽ സംസ്കരിക്കുകയാണു വേസ്റ്റ് മാനേജ്മെന്റ്. യൂറോപ്പിലും മറ്റു വിദേശ രാജ്യങ്ങളിലും അറേബ്യൻ നാടുകളിലും ഇത്തരത്തിൽ മാലിന്യ നിർമ്മാർജ്ജനം ഫലപ്രദമായും വിജയപ്രദമായും നിർവ്വഹിക്കുന്നുണ്ട്. നമ്മുടെ നാട്ടിൽ മാത്രം അതു ഫലപ്രദമാകുന്നില്ല. മാലിന്യം സംസ്കരിച്ച് അതിലൂടെ ഊർജ്ജവും വളവും ഉത്പാദിപ്പിക്കാവുന്ന ആധുനിക സാങ്കേതികവിദ്യ ഇന്നുണ്ട്. എന്നാൽ അതെല്ലാം നടപ്പിലാക്കാൻ രാഷ്ട്രീയമായ ഇച്ഛാശക്തിയും താത്പര്യവും ആവശ്യമാണ്. യഥാവിധി മാലിന്യം സംസ്കരിക്കാനും അതിൽനിന്ന് ഉപോത്പന്നങ്ങളായി ഊർജ്ജവും ജൈവ വളവും ഉത്പാദിപ്പിക്കാനും നമുക്കു കഴിഞ്ഞാൽ അതു വിപ്ലവകരമായ മാറ്റങ്ങൾക്കു വഴിതെളിക്കും.

8

വെറുതെ കണ്ടിരിക്കാനുള്ളതല്ല സിനിമ. ക്ലാസ്സിൽ അലസരായിരിക്കുന്ന കുട്ടികളോട് 'നീ സിനിമ കാണാനാണോ വന്നത്' എന്നു ചോദിക്കുന്ന അധ്യാപകർ സിനിമയെ സംബന്ധിച്ച പൊതുസമൂഹത്തിന്റെ മനോഭാവമാണ് വെളിപ്പെടുത്തുന്നത്. ആയാസരഹിതമായ നേരമ്പോക്കായി സിനിമ തെറ്റിദ്ധരിക്കപ്പെടുന്നു. സിനിമ കണ്ടുകളയുന്ന നേരം വല്ലതും നാലക്ഷരം വായിക്കാൻ പറഞ്ഞ് രക്ഷിതാക്കൾ കുട്ടികളെ ശാസിക്കാറുണ്ട്. ഈ നിലപാടുകളും പരിഹാസവും അരക്കിട്ടുറപ്പിക്കുന്നവയാണ് പല മുഖ്യധാരാ ചലച്ചിത്രങ്ങളും അവയ്ക്ക പ്രചാരം നൽകാൻ ടെലിവിഷൻ ചാനലുകൾ മത്സരിക്കുന്നു. ചെലവുകുറഞ്ഞ ജനപ്രിയ പരിപാടിയായി പരിഗണിച്ച് ചാനലുകൾ പുതിയതും പഴയതുമായ ചലച്ചിത്രങ്ങളുടെ ആവർത്തിച്ചുള്ള സംപ്രേഷണത്തിൽ മുഴുകുന്നു. സിനിമകൾ പൂർണരൂപത്തിലും തിരഞ്ഞെടുത്ത ഭാഗങ്ങളായും (ഹാസ്യരംഗങ്ങൾ, ഗാനരംഗങ്ങൾ തുടങ്ങിയവ) നമുക്ക് ടെലിവിഷനിലൂടെ ആസ്വദിക്കാം. ചലച്ചിത്രത്തിന്റെ ദോഷപ്രകരണം ഇങ്ങനെ നീണ്ടുപോകുന്നതാണ്.

എല്ലാ ഇന്ദ്രിയങ്ങളുടെയും ഉണർവ് ആവശ്യപ്പെടുന്നവയാണ് നല്ല ചലച്ചിത്രങ്ങൾ. അലസമായി ഒരു നിമിഷം പോലും ഇരിക്കാൻ അവ നമ്മെ അനുവദിക്കുന്നില്ല. കൊട്ടകയിലെ വെളിച്ചം കെടുന്ന നിമിഷം

മുതൽ ധ്യാനനിരതരായിരുന്ന് പഠിക്കാൻ നാം നിർബന്ധിതരാവുന്നു. സത്യജിത് റായിയുടെ ചലച്ചിത്രങ്ങൾ ഇതിനു ഉദാഹരണമാണ്. കാല ദേശങ്ങൾക്കും ഭാഷയ്ക്കുമെല്ലാം അതീതമായ സംവേദനത്വം അവ ഉൾ ക്കൊള്ളുന്നു. നല്ല ചലച്ചിത്രങ്ങൾ നല്ല പാഠപുസ്തകങ്ങൾ തന്നെയാണ്. തദ്ദേശീയവും വൈദേശികവുമായ ഏറെ ചലച്ചിത്രങ്ങൾ ഈ നിലയിൽ ശ്രദ്ധേയമായിട്ടുണ്ട്. അവ ഓരോ കാഴ്ചയിലും പുതിയ അനുഭവങ്ങളും അനുഭൂതികളും നൽകുന്നു. ആഴത്തിലുള്ള വ്യാഖ്യാനങ്ങൾക്കും തിരിച്ച റിവുകൾക്കും അവസരമൊരുക്കുന്നവയാണ് അവ. 'പഥേർ പാഞ്ചാലി' എന്ന റായ് ചലച്ചിത്രം ലോകം മുഴുവനുള്ള ചലച്ചിത്ര പഠിതാക്കളുടെ സവിശേഷ ശ്രദ്ധയാകർഷിച്ചിട്ടുണ്ട്. സ്വാതന്ത്ര്യാനന്തര ഭാരതത്തിന്റെ നേർക്കാഴ്ച എന്ന നിലയിൽ അതിനെ വിലയിരുത്തിയവരുണ്ട്. ജീവി തത്തെ സംബന്ധിച്ച ചലച്ചിത്രകാരന്റെ ഉൾക്കാഴ്ചയായി അതിനെ വ്യാഖ്യാനിച്ചവരുണ്ട്. വിവിധ നിരൂപകരുടെ പഠനങ്ങൾ പഥേർ പാഞ്ചാ ലിയുടെ ആകർഷണീയതയും അർഥോത്പാദനപരമായ മികവും വെ ളിപ്പെടുത്തുന്നു. വിക്ടോറിയ ഡിസീക്കായുടെ ബൈസിക്കിൾ തീവ്സ് എന്ന സിനിമയാണ് ചലച്ചിത്രരംഗത്തേക്കു കടന്നുവരാൻ റായിയെ പ്രേ രിപ്പിച്ചത്.

9

മനുഷ്യൻ അവന്റെ ബാഹ്യവും ആന്തരികവുമായ ലോകത്തെ വാ യിച്ചും പുനർനിർമിച്ചുമാണ് പുരോഗതിയിലേക്കു കുതിച്ചത്. വായന തന്നെയായിരുന്നു എല്ലാ പുനർനിർമാണത്തിന്റെയും അടിത്തറ. അതി നാൽ വായന ഏറ്റവും വലിയ സർഗാത്മക പ്രവർത്തനമാകുന്നു. ഓരോ കൃതിയും വായനയാണ്. ഓരോ വായനയും സൃഷ്ടിയാണ്. വായന എഴു ത്തിനെ അപ്രധാനീകരിക്കുന്ന കാഴ്ച ആധുനികലോകത്ത് കാണാം. എഴുത്തിന്റെ ഉപോത്പന്നങ്ങൾ എന്ന നിലയിൽ നിന്ന് ഓരോ വായന യും സ്വാതന്ത്ര്യം കൈവരിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുന്നു. പരമമായ സ്വാതന്ത്ര്യമാ ണ് വായന. അത് ഒന്നിനും കീഴ്പ്പെടുന്നില്ല.

കഥയും കവിതയുമെല്ലാം ഓരോ വായനയായി പരിഗണിക്കപ്പെടു മ്പോൾ നിരൂപണം വായനയുടെ വായനയായി താണുപോകാൻ ഇട യില്ലേ? സാമൂഹിക ജീവിതത്തിലെ അവസ്ഥാന്തരങ്ങളെയും വൈകാരി കജീവിതത്തെയും കവി തന്റേതായ നേട്ടത്തിലൂടെ വായിക്കുന്നു. ഈ വായനയെ വിശ്ലേഷിക്കുകയോ സംശ്ലേഷിക്കുകയോ ആണ് നിരൂപകൻ ചെയ്യുന്നത്. പൊതുവേ ഇങ്ങനെ തോന്നാമെങ്കിലും കൃതിയുടെ പരിമിതി ക്കപ്പുറമുള്ള ഒരു വായനയാണ് നിരൂപണത്തെ സർഗാത്മകമാക്കുന്നത്. അനുഭവങ്ങളും വികാരങ്ങളും ഉൾപ്പെടുന്ന വായനാപ്രക്രിയയാണ് നിരൂ പണത്തിലെ മുഖ്യഘടകം. അതിനെ പ്രോജ്വലിപ്പിക്കാനുള്ള ഉപകരണ മായാണ് കൃതി നിലകൊള്ളുന്നത്. അഭിജ്ഞാനശാകുന്തളം എന്നൊരു കൃതി എഴുതപ്പെടാതിരുന്നാലും പ്രകൃതിയും മനുഷ്യനും തമ്മിലുള്ള പാര സ്പര്യത്തെക്കുറിച്ച് നിരൂപണങ്ങൾ ഉണ്ടാവുകതന്നെ ചെയ്യും. മറ്റൊരു കൃതിയെ ഉപജീവിച്ച് അത്തരം സാധ്യതകൾ അന്വേഷിക്കാൻനിരൂപകൻ നിർബന്ധിതനാവും. നിരൂപണം മറ്റേതു സൃഷ്ടിയെയും പോലെ തന്നെ അനിവാര്യതയാണ്. വായനയുടെ പാരമ്യത്തിലുണ്ടാവുന്ന വീർപ്പുമുട്ടൽ അതിനു ഹേതുവാകുന്നു. എടുത്തു പറയാവുന്ന ഒരുസാഹിത്യകൃതി തന്നെ നിരൂപകന് ഉപകരണമായിക്കൊള്ളണമെന്നില്ല.

10

സിനിമയുടെ ശില്പി സംവിധായകനാണ്. അഭിനേതാക്കളും മറ്റ് സാങ്കേതിക പ്രവർത്തകരും സംവിധായകന്റെ ഉപകരണങ്ങൾ മാത്രം. ചാർളി ചാപ്ലിൻ എന്ന വിഖ്യാത ചലച്ചിത്രകാരനെ മുൻനിർത്തി സംവി ധാനം എന്ന കലയെ പരിശോധിക്കുകയാണിവിടെ. സിനിമ സംവിധായ കന്റെ കലയാണ് എന്ന് ഉറച്ചു വിശ്വസിക്കുന്നയാളാണ് അടൂർ ഗോപാ ലകൃഷ്ണൻ. ലോക ചലച്ചിത്രഭൂപടത്തിൽ മലയാള ചലച്ചിത്രങ്ങൾക്ക് ഇടമുണ്ടാക്കാൻ ആ പ്രതിഭാശാലിയായ സംവിധായകനു കഴിഞ്ഞു. നാടകത്തിലെ നടനിൽ നിന്നു വ്യത്യസ്തമായി സംവിധായകന്റെ പൂർ ണനിയന്ത്രണത്തിൽ പ്രവർത്തിക്കേണ്ട ഉത്തരവാദിത്വമാണ് സിനിമാ നടനുള്ളത് എന്ന് അടൂർ വസ്തുനിഷ്ഠമായി സമർഥിക്കുന്നു. തന്റെ സാന്നിധ്യം സിനിമയിലുണ്ടാക്കുന്ന ഭാവപ്പകർച്ച എന്ത് എന്നു നടൻ തി രിച്ചറിയുന്നതുതന്നെ സിനിമ പൂർണരൂപത്തിൽ കാണുമ്പോഴാണ്. ചി ത്രീകരണവേളയിൽ അയാൾ ഒരു ഉപകരണം മാത്രമായി വർത്തിക്കുന്നു. കാഴ്ചയുടെ കോണും വസ്തുക്കളുടെ വിന്യാസവുമെല്ലാം നിശ്ചയിക്കു ന്നത് സംവിധായകനാണ്. കഥതന്നെ സംവിധായകന്റെ വീക്ഷണത്തിലൂ ടെയാണ് സിനിമാരൂപം പ്രാപിക്കുന്നത്. ദൃശ്യങ്ങളെ സമീപം, വിദൂരം, മധ്യമം എന്നിങ്ങനെ വിന്യസിക്കുന്നതിൽപ്പോലും സംവിധായകന്റെ സൂ ക്ഷ്മദൃഷ്ടി കാണാം. കഥാകൃത്ത്, നടീനടന്മാർ, കാമറാമാൻ, മറ്റനേകം സാങ്കേതികവിദഗ്ധർ എന്നിവരുടെ കൂട്ടായ്മയായി സിനിമയെ കാണു മ്പോഴും എല്ലാറ്റിന്റെയും നിയന്താവായി സംവിധായകൻ നിലകൊള്ളു ന്നു.

'ദ കിഡ്' എന്ന സിനിമ ചാർളി ചാപ്ലിന്റെ മികച്ച ചലച്ചിത്രങ്ങളിൽ ഒന്നാണ്. സംവിധാനത്തിനു പുറമേ ഇതിൽ തിരക്കഥാരചനയും അഭിന യവുമെല്ലാം നിർവഹിച്ചുകൊണ്ടാണ് ചാപ്ലിൻ തന്റെ പ്രതിഭ തെളിയിച്ച ത്. ദ കിഡിന്റെ നിർ മാണപ്രവർത്തനങ്ങളെക്കുറിച്ച് ചാപ്ലിൻ തന്നെ വി വരിക്കുന്നുണ്ട്. ഈ സിനിമയുടെ പശ്ചാത്തലത്തിൽ സംവിധായകന്റെ സ്ഥാനത്തെക്കുറിച്ച് അന്വേഷിക്കാവുന്നതാണ്. ചാപ്ലിന്റെ പല ചലച്ചിത്ര ങ്ങളിലുമെന്നപോലെ ദ കിഡിലും സംഭാഷണ ങ്ങൾക്കു പകരം സബ് ടൈറ്റിലുകളാണ് ഉപയോഗിച്ചിട്ടുള്ളത്. ഭാഷയുടെ പരി കളെ അതിജീ വിക്കാനുള്ള തന്ത്രമായിട്ടാവും അദ്ദേഹം ഈ രീതി സ്വീകരിക്കുന്നത്. സബ് ടൈറ്റിലുകളിലൂടെ സംഭാഷണം മാത്രമല്ല ചാപ്ലിൻ ആവിഷ്കരി ക്കുന്നത്. സന്ദർഭ വിശദീകരണം, നിരീക്ഷണങ്ങൾ, കഥാസൂചന തുട ങ്ങിയവ വെളിപ്പെടുത്താനും ഇത് പ്രയോജനപ്പെടുത്തുന്നുണ്ട്.

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. किन्हीं दो मलयालम गद्यांशों का अनुवाद कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कलाः कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुभव सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अंग्रेज़ अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है
- हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा-शैली की जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तर ही अनुवाद है। हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है। अतः उसकी अपनी अनेक ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, मुहावरे विषयक आदि-निजी विशेषताएँ होती हैं, जो अन्य भाषाओं से कुछ या काफी भिन्न होती हैं, इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि हमेशा स्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्ति की पूर्णतः समान अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में हो।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा

Discussion / चर्चा

प्रायः स्रोत भाषा की सामग्री और उनके अनुवाद स्वरूप प्राप्त लक्ष्य भाषा की सामग्री, ये दोनों अभिव्यक्ति तथा अर्थ के स्तर पर एक या समान नहीं होतीं। अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है। वे केवल एक दूसरे के मात्र निकट होती हैं। तात्पर्य यह है कि अनुवादक को अनुवाद करते समय इस बात में काफी सतर्क रहना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद उसकी सहज प्रकृति के सर्वथा अनुरूप हो। स्रोत भाषा की किसी भी रूप में छाया न हो।

अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

1

The country in which we are born, where we grow and live is our motherland. We are born in this country, we live here, we grow here, and

in the end we are absorbed in it. We must love our land as much as we love our mother. Those who live with us have equal rights in this land and hence they are our brethren. Just as the head of a big family thinks of the good of the entire family rather than his own individual welfare at heart, we must also have in our hearts the welfare of our brethren and the progress of our country. Even if we have to suffer losses or meet with difficulties in fulfilling this, we should not mind them.

जिस देश में हम पैदा हुए हैं, जहाँ हम बडे होते हैं और रहते हैं, वह हमारी मातृभूमि है। हम इस देश में पैदा हुए हैं, हम यहाँ रहते हैं, हम यहाँ बड़े होते हैं और अंत में इस में विलीन होते हैं। जितना प्यार हम अपनी माँ से करते हैं, उतना ही प्यार हमें मातृभूमि से करना चाहिए। जो हमारे साथ रहते हैं, उनको इस देश में समान अधिकार प्राप्त है और इसीलिए वे हमारे भाई हैं। जिस प्रकार एक बडे परिवार का मुखिया अपने वैयक्तिक कल्याण की अपेक्षा पूरे परिवार की भलाई के बारे में सोचता है, उसी प्रकार हमारे दिल में अपने भाइयों के कल्याण और देश की प्रगति का विचार होना चाहिए। चाहे हमको उनके निर्वाह में नुकसान उठाना पडें या मुश्किलों का सामना करना पडें, हमें उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

> Translation is the transference of the content of a text from one language into another,bearing in mind that we cannot always dissociate the content from the form .
>
> -Foresten

2

Once upon a time, large areas of India were covered with forests full of different kinds of trees. As the population grew, trees began to be cut down for men's use. That is how the wonderful forests described in our ancient poems came to be destroyed, and a great part of our forest wealth was lost. Now we are trying to compensate for this loss and our Government wants trees to be planted all over the country. A festival has been started for this purpose; it is called 'Vanamahotsava'. Since trees are the country's wealth, we must consider it as our sacred duty to protect them. We should plant new trees wherever we can look after them well.

पहले भारत के अधिकांश भाग विभिन्न प्रकार के वृक्षों से भरे हुए जंगल थे। जनसंख्या के बढ़ने पर मनुष्य के उपयोग के वृक्ष काटे जाने लगे। इस प्रकार प्राचीन काव्य में वर्णित वन विनष्ट हुए और हमारी वन-संपत्ति का बहुत बड़ा भाग नष्ट हुआ। अब हम इस नुकसान की क्षतिपूर्ति कर रहे हैं और सरकार देश भर में नये वृक्षों को लगाना चाहती है। इसके लिए हम एक त्योहार भी मनाने लगे हैं जिसका नाम है 'वनमहोत्सव'। वृक्ष देश की संपत्ति है, इसलिए उसकी रक्षा करना हमारा पवित्र धर्म है। हमें अपनी शक्ति के अनुसार नये पेडों को लगाकर उनकी देखभाल करनी चाहिए।

3

Today we see a society in which there are tremendous differences between man and man. Great riches on one side and great poverty on the

other. Some people live in luxury without doing any work, whilst others work from morning to night with no rest or leisure and yet have not got the barest necessaries of life. This cannot be right. It is the negation of justice. It is not the fault of our individuals who happen to be rich. It is the fault of the system and it is up to us to change this system which permits exploitation of man by man and produces so much misery. Our country can produce enough to permit every man and woman living in it to live in comfort and peace. Every man and woman must have the opportunity to develop the best of their ability. But to do so we shall have to forget some of our ideas of a by-gone age.

मनुष्य और मनुष्य के बीच बहुत बड़ा अन्तर रखनेवाले समाज को ही आज हम देखते हैं। एक तरफ बहुत बड़ी धनिकता है और दूसरी तरफ बहुत बड़ी गरीबी। कुछ लोग कोई काम किए बिना ही सुख-भोगों का अनुभव करते हैं, जबकि अन्य कुछ लोग दिन-रात विश्राम किए बिना अथक काम करने पर भी जीवन के लिए आवश्यक अल्पतम वस्तुएँ भी नहीं जुटा पाते। यह ठीक नहीं होगा। यह न्याय का निषेध है। यह धनी बने हुए लोगों का अपराध नही हैं। यह व्यवस्था का अपराध है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण करने का अधिकार देनेवाली तथा दुःख उत्पन्न कर देनेवाली इस व्यवस्था को बदलना हमारा काम है। यहाँ जीनेवाले हर स्त्री-पुरुष को शांतिपूर्वक तथा सुखपूर्वक जीवन बिताने के लिए आवश्यक सामग्रियों का उत्पादन हमारा देश कर सकता है। हर स्त्री-पुरुष को अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार प्रगति पाने का अवसर प्राप्त होना चाहिए। इसके लिए हमें अतीत की कुछ धारणाओं को भूलना होगा।

4

Khadi was acceptable to most people as a symbol of freedom . During the struggle for independence it had political importance. Since independence, however, even some of those who were devoted to khadi have begun to look askance at it . With the decrease in the demand, khadi workers have been thrown out of employment . Some living near towns have been taken to casual labor, while others in far away villages have joined the ranks of unemployed. The economic importance of khadi is obviously realized by few. Khadi had political meaning when the fight for freedom was on. It has equal importance today as a means of consolidating that freedom . Khadi can lessen both unemployment and under-employment.

अधिकांश लोगों को आजादी के प्रतीक के रूप में खादी स्वीकार्य थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उसकी राजनीतिक प्रधानता थी। लेकिन आज़ादी के बाद ऐसे भी कुछ लोग जो खादी के भक्त थे। उसे संदेह की दृष्टि से देखने लगे हैं। मांग की कमी के कारण खादी के कामगार बेकार हो गये हैं। कस्बों के समीप रहनेवाले कुछ मज़दुर अनियत कामों में लग गये हैं। जबकि दूर दराज के गांवों में रहनेवाले मज़दूर बेरोज़गारों की श्रेणी में मिल गये हैं। खादी के आर्थिक महत्व को बहुत कम लोग ही साफ-साफ समझते हैं। जब स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था, तब खादी की राजनीतिक प्रधानता थी। आज़ादी को सुस्थिर करने के साधन के रूप में उसका आज भी उतना ही महत्व है। खादी बेरोज़गारी एवं रोज़गारी की कमी दोनों को कम कर सकती है।

5

The aim of writing business letters is something different. It is not sufficient to give merely the information. In modern times we can improve

the trade of a country through this, and we can establish contacts with far off countries. This is a beautiful key by which the closed doors are opened. By this new opportunities markets are obtained and new ways are found for our goods and services. Many people have got high positions through this, The trade of many business people has improved by this. There is the fear of losing customers also, if slightest confusion is caused. By reading the business letter, the customer should get as much pleasure as he would get in the presence of the writer. He must be impressed as if the sender himself is explaining to him.

व्यापारिक पत्र लिखने का उद्देश्य कुछ भिन्न है। इसमें केवल सूचना देना पर्याप्त नहीं है। आधुनिक काल में इसके द्वारा हम देश के व्यापार का विकास कर सकते हैं और सुदूर देशों के साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं। यह एक सुन्दर चाबी है, जिसके द्वारा बन्द दरवाजे खोले जाते हैं। इसके द्वारा नये बाज़ार प्राप्त किये जाते हैं और हमारे माल तथा सेवाओं के लिए नये रास्ते खोज निकाले जाते हैं। अनेक लोग इसके जरिए उच्च पदों पर पहुंचे हैं कई व्यापारियों का व्यापार इसके ज़रिए विकसित हुआ है। पर इसमें ज़रा सी उलझन पड़ जाने से ग्राहकों के छूट जाने का भी खतरा है व्यपारिक पत्र पढ़कर ग्राहकों को उतनी ही प्रसन्नता होनी चाहिए जितने लेखक की उपस्थिति में मिल सकती हैं। उस पर ऐसा प्रभाव पड़े कि मानो पत्र भेजनेवाला स्वयं उसको समझा रहा है।

6

Modern women are less feminine and more masculine. In her mode of living, mode of eating and drinking works and activities, she is not feminine, but is imitating the man. In the place of good conduct, shyness and affection, she likes authority, sternness and disaffection very much. Now she is not the pride of the house but that of the club . Instead of fulfilling her duties to her husband, children and other family members, she takes pleasure in neglecting them . She considers idealism as an old-fashioned thought . She is proud of standing on the threshold of reality . She keeps on forgetting the value of chastity. Today women not only possess vice, but also virtues . Instead of being suffocated under veils, she stands in the open . with the help of adventurous spirit, education and enthusiasm she has thrown away the mantle of Frailty and is becoming strong.

7

Mike and Morris lived in the same village. While Morris owned the largest jewellery shop in the village, Mike was a poor farmer. Both had large families with many sons, daughters-in-law and grandchildren. One fine day, Mike, tired of not being able to feed his family, decided to leave the village and move to the city where he was certain to earn enough to feed everyone. Along with his family, he left the village for the city. At night, they stopped under a large tree. There was a stream running nearby where they could freshen up themselves. He told his sons to clear the area below the tree, told his wife to fetch water and he instructed his daughters-in-law to make up the fire and started cutting wood from the tree himself. They didn't know that in the branches of the tree, there was a thief hiding. He watched as Mike's family worked together and also noticed that they had nothing to cook. Mike's wife also thought the same and asked her husband

"Everything is ready but what shall we eat?". Mike raised his hands to heaven and said " Don't worry. He is watching all of this from above. He will help us." The thief got worried as he had seen that the family was large and worked well together. Taking advantage of the fact that they did not know he was hiding in the branches, he decided to make a quick escape.

8

Plato is the earliest important educational thinker and education is an essential element in "The Republic" (his most important work on philosophy and political theory, written around 360 B.C.). In it, he advocates some rather extreme methods: removing children from their mothers' care and raising them as wards of the state, and differentiating children suitable to the various castes, the highest receiving the most education, so that they could act as guardians of the city and care for the less able. He believed that education should be holistic, including facts, skills, physical discipline, music, and art. Plato believed that talent and intelligence are not distributed genetically and thus are found in children born to all classes, although his proposed system of selective public education for an educated minority of the population does not follow a democratic model.

9

A sparrow is a small bird, which is found throughout the world. There are many different species of sparrows. Sparrows are only about four to six inches in length. Many people appreciate their beautiful song. Sparrows prefer to build their nests in low places-usually on the ground, clumps of grass, low trees and low bushes. In cities they build their nests in building nooks or holes. They rarely build their nests in high places. They build their nests out of twigs, grasses and plant fibres. Their nests are usually small and well-built structures. Female sparrows lay four to six eggs at a time. The eggs are white with reddish brown spots. They hatch between eleven to fourteen days. Both the male and female parents care for the young. Insects are fed to the young after hatching. The large feet of the sparrows are used for scratching seeds. Adult sparrows mainly eat seeds. Sparrows can be found almost everywhere, where there are humans. Many people throughout the world enjoy these delightful birds.

10

Long, long ago, in a big forest, there were many trees. Among the cluster of trees, there was a very tall pine tree. He was so tall that he could talk to the stars in the sky. He could easily look over the heads of the other trees. One day late in the evening, the pine tree saw a ragged, skinny girl approaching him. He could see her only because of his height. The little girl was in tears. The pine tree bent as much as he could and asked her: "What is the matter? Why are you crying ?"

The little girl, still sobbing, replied, "I was gathering flowers for a garland for goddess Durga, who I believe, would help my parents to overcome their poverty and I have lost my way". The pine tree said to the

little girl, “It is late in the evening. It will not be possible for you to return to your house, which is at the other end of the forest. Sleep for the night at this place.” The pine tree pointed out to an open cave-like place under him. The little girl was frightened of wild animals. The girl quickly crept into the cave-like place. The pine tree was happy and pleased with himself. He stood like a soldier guarding the place. The little girl woke up in the morning and was amazed to see the pine tree standing guard outside the cave. Then her gaze travelled to the heap of flowers that she had gathered the previous night. The flowers lay withering on the ground. The pine tree understood what was going on in the girl’s mind. He wrapped his branches around the nearby flower trees and shook them gently. The little girl’s eyes brightened. But a great surprise awaited her. The pine tree brought out a bag full of gold coins which had been lying for years in the hole in its trunk and gave it to the girl. With teary eyes she thanked her benefactor and went away.

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अनुवाद की समस्या पर टिप्पणी कीजिए।
2. ‘अनुवाद संस्कृति का वाहक है’, टिप्पणी लिखिए
3. अनुच्छेदों का अनुवाद करते समय उपस्थित समस्या पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कलाः कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुभव सिद्धांत की रूप रेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद- कहानी, कविता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है
- हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा-शैली की जानकारी प्राप्त करता है
- सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करते वक्त उत्पन्न होने वाली समस्याओं से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करना कठिन काम ज़रूर है, किन्तु असंभव नहीं है। सृजनात्मक साहित्य में काव्य का अनुवाद, नाटक का अनुवाद, कथा साहित्य का अनुवाद आदि शामिल हैं। सफल काव्यानुवाद काफी कठिन कार्य है। क्योंकि सामान्य भाषा में कही गई बात का अनुवाद अपेक्षाकृत बहुत सरल होता है, किन्तु काव्य भाषा अपनी अर्थ रचना में काफी जटिल होती है। यह बात हर सृजनात्मक अनुवाद में लागू होती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

काव्यानुवाद, सृजनात्मक अनुवाद

Discussion / चर्चा

यह एक निर्विवाद सत्य है कि हर अनुवादक सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद नहीं कर सकता। सृजनात्मक अनुवाद सहज प्रतिभा, श्रम तथा अभ्यास के बिना संभव नहीं। कवि या लेखक एक भाषा विशेष का ही होता है और वह जो कुछ कहता है, वह केवल उसी भाषा में कहा जा सकता है, और उसी रूप में कहा जा सकता है। उसकी महानता मूल रचना में होती है और मूल को पढ़कर ही हमें उसकी महानता के दर्शन हो सकते हैं। विशिष्ट काव्य रचना का अनुवाद भी, विशिष्ट काव्य रचना की तरह विशिष्ट मूड निष्ठ होता है। इस बात को यों भी समझा जा सकता है कि कविता अनुभूति है और सच्ची अनुभूति अनूद्य नहीं हो सकती। किसी भी कवि के सारे क्षणों को कोई भी दूसरा कवि-अनुवादक जी नहीं सकता, चाहे वह मूल कवि की तुलना में कितना भी बड़ा कवि क्यों न हो।

अनुवादक यद्यपि अच्छा काव्यानुवाद करना चाहता है फिर भी मूल के साथ पूरा न्याय तो वह कदाचित नहीं कर सकता। किन्तु कम से कम वह यदि चाहता है कि मूल के साथ अन्याय न हो,तो उसे किसी कवि की कविताओं से केवल कुछ कविताओं की अपनी रूचि और अनुभूति के अनुकूल चुन लेना चाहिए और उन्हीं का अनुवाद करना चाहिए।

अंग्रेज़ी-कविता

She dwelt among the untrodden ways

She dwelt among the untrodden ways

Beside the springs of Dove,

A Maid whom there were none to praise

And very few to love:

A violet by a mossy stone

Half hidden from the eye!

—Fair as a star, when only one

Is shining in the sky.

She lived unknown, and few could know

When Lucy ceased to be;

But she is in her grave, and, oh,

The difference to me!

-William wordsworth

- सफल काव्यानुवाद बहुत ही कठिन कार्य है किन्तु वह असंभव नहीं है

हिन्दी अनुवाद

वीरानियों में रहती थी वह

वीरानियों में रहती थी वह

डोव के झरनों के पास

नहीं कोई सराहनेवाला था उसे

न ही थी किसी से प्यार की आस

कोई-जमे पत्थर के पास हो फूल जैसे

अधछिपी आँखों से,

या चमकता आकाश में अकेला है जो

भली लगती थी वो

उस तारे की तरह

कोई नहीं जानता था उसे, शायद ही किसी को हो पता

हो गया कब अन्त उसका

> ▶ Translation of a literary work is as tasteless as a stewed strawberry.
> - H.D Forest Smith

सो गई, हाय मगर अपनी कब्र में लूसी

और बदल गई है मेरी दुनिया ही।

-कुलदीप सलिल

कविता के अनुवाद को लेकर काफी विवाद है। बहुतों की धारणा यह रही है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता।

वैसे तो किसी भी रचना का अनुवाद सरल नहीं होता, किन्तु कविता का इसलिए और भी कठिन होता है कि कई बातों में कविता अन्य रचनाओं से अलग होती है। इसमें कुछ वे तत्व होते हैं जो अन्य में नहीं होते,और जिन्हें अनुवाद में ला पाना काफी कठिन होता है।

अंग्रेज़ी-कविता

The Wind

This is the end of me but you live on

The wind, crying and complaining,

Rocks,the house and the forest.

Not each pine tree separately

With the whole boundless distance,

Like the hulls of sailing-ships

Ridding as anchor in a bay

It shakes them not out of mischief,

And not in aimless fury,

But to find for you,out of it's grief,

The words of a lullaby.

-Boris Pasternak

हिन्दी अनुवाद

पवन

मैं व्यतीत हुआ, पर तुम अभी हो रहो

हवा, चीखती चिल्लाती हुई हवा-झकझोर रही है

मकानों को जंगलों को

चीड़ के अलग-अलग पेड़ों को नहीं

वरन सबों को एक साथ-तमाम सीमाहीन दूरियों को-

किसी खाड़ी में लंगर डाले हुए, लहरों पर उठते गिरते हुए
तमाम जहाज़ों की तरह
और हवा उन्हें झकझोर रही है
केवल चंचलतावश नहीं
न निष्प्रयोजन क्रोध से अंधी होकर
वरन अपनी चरम पीड़ा में से
मन्थन में से,
तुम्हारी लोरी के लिए उपर्युक्त शब्द
खोजते हुए ।

-धर्मवीर भारती

कहानी

चीफ की दावत - भीष्म साहनी

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ़ की दावत थी। शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फ़ुर्सत न थी। पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए मुँह पर फैली हुई सुर्ख़ी और पाउडर को मले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट पर सिगरेट फूँकते हुए चीज़ों की फ़ेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आख़िर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकंबल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज़, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूम कर अँग्रेज़ी में बोले- 'माँ का क्या होगा?'

श्रीमती काम करते-करते ठहर गईं, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं- 'इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो, रात-भर बेशक वहीं रहें। कल आ जाएँ।'

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिला कर बोले- 'नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।'

सुझाव ठीक था। दोनों को पसंद आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं- 'जो वह सो गईं और नींद में ख़र्राटे लेने लगीं, तो? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे।'

'तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाज़ा बंद कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जा कर सोएँ नहीं, बैठी रहें, और क्या?'

'और जो सो गई, तो? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो

तुम ड्रिंक ही करते रहते हो।'

शामनाथ कुछ खीज उठे, हाथ झटकते हुए बोले- 'अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही ख़ुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी!'

'वाह! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ? तुम जानो और वह जानें।'

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौक़ा बहस का न था, समस्या का हल ढूँढ़ने का था। उन्होंने घूम कर माँ की कोठरी की ओर देखा। कोठरी का दरवाज़ा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट से बोले—मैंने सोच लिया है,—और उन्हीं क़दमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था। बेटे के दफ़्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाए।

माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे।

माँ ने धीरे से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम जो जानते हो, माँस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।

जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना।

अच्छा, बेटा।

और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम ग़ुसलख़ाने के रास्ते बैठक में चली जाना।

माँ अवाक बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे से बोलीं—अच्छा बेटा।

और माँ आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे ख़र्राटों की आवाज़ दूर तक जाती है।

माँ लज्जित-सी आवाज़ में बोली—क्या करूँ, बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती।

अंग्रेज़ी अनुवाद

Dinner for the Boss - Gillian Wright

The boss was invited for dinner this evening at the home of Mr Shyamnath. Shyamnath and his wife hadn't time even to wipe away their sweat. She, in a dressing down, her uncombed hair knotted in a bun, oblivious to the rouge and powder smudged on her face, and he, puffing cigarette after cigarette, a list in his hand, were rushing from room to room.

Finally, as the clock struck five, the preparations approached completion. Chairs, a table, stools, napkins and flowers had all arrived on the veranda. The drinks had been arranged in the sitting room. Now all unnecessary domestic articles were being hidden behind cupboards and under beds. Suddenly an obstacle appeared before Shyamnath: What to do with Mother?

Neither he nor his capable wife had directed their attention to this matter.

Mr. Shyamnath turned to Mrs Shyamnath and said in English, ‘ What can we do with Mother?’

Mrs Shyamnath paused in her work and, after considering for a while, said, ‘ Send her to her friend’s house at the back. She’ll be sure to stay there all night and come back tomorrow.’

Shyamnath, a cigarette hanging from his mouth, regarded his wife through narrowed eyes, thought for a moment, shook his head and said, ‘No, I don’t want that old woman to start coming here again. It took enormous trouble to get rid of her before. We should tell Mother to eat early and go to her room. The guests will come at about eight o’clock. Before that, she can do all she has to.’

It was a good suggestion. They both approved of it. But then suddenly Mrs Shyamanath spoke. ‘If she goes to sleep and starts snoring, then what?’ People will be eating on the veranda just next to her room,’ So we’ll tell her to shut her door from inside, I’ll lock it from outside. Or I’ll tell her to go inside but not to sleep, to keep awake. What else ? ‘And if she nods off ? Goodness knows how long dinner will go on. You drink until eleven O’clock .’

Shyamnarh became a little irritated. He flung up his hands and said, ‘She was all ready to go off to my brother, and you went and interfered just to show how good you were! Vah!(Wow) And should I show myself in a bad light by interfering between a mother and her son? You know what went on, and so does she.’

Mr Shyamnath kept quiet. This was no time to argue; they had to find a solution to the problem. He turned towards his mother’s room, which opened onto the veranda. Glancing along the veranda, he said, ‘I have an idea,’ and he walked over to the doorway of his mother’s room. She was sitting inside on a wooden takht(stool) pushed against the wall, a dupatta wrapped around her head telling her prayer beads. Having watched all the preparations since the morning, her heart was thumping, The bad sahib from her son’s office was coming. May everything go off satisfactorily!

‘Mother, today you eat early. The guest will come at half past seven. ‘She slowly unwrapped the dupatta from her face and said, looking at her son,’ I won’t eat today, son, you know that I don’t eat anything when meat and fish are cooked in the house. ‘whatever- just get all you have to do over with early ‘Very well, son.’

‘And Mother, first we’ll be in the sitting room. For that time you sit on the veranda. Then when we come out here, you go through the bathroom to sit in the sitting room.’

His mother looked at him speechless. Then she said softly, ‘Very well, son.’ And Mother, don’t go to sleep early today. The sound of your snoring carries a long way.’

His mother said rather ashamedly, ‘what can I do son? It’s not in my control. Ever since I woke up from my sickness, I can’t breathe through my nose.’

पूस की रात

-प्रेमचन्द

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा, 'सहना आया है, लाओ, जो रुपए रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।'

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली, 'तीन ही तो रुपए हैं, दे दोगे तो कंबल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।'

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कंबल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और ख़ुशामद करके बोला, 'ला दे दे, गला तो छूटे। कंबल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूंगा।'

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली, 'कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूं तो कौन-सा उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कंबल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपए न दूँगी, न दूँगी।'

हल्कू उदास होकर बोला, 'तो क्या गाली खाऊँ?'

मुन्नी ने तड़पकर कहा, 'गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?'

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भांति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली, 'तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।'

हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपटकर तीन रुपए कंबल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

****

पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पतों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा कांप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट मे मुंह डाले सर्दी से कूं-कूं कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी। हल्कू ने घुटनियों कों गरदन में चिपकाते हुए कहा, 'क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट

रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे? अब खाओ ठंड, मैं क्या करूं? जानते थे, मैं यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।' जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूं-कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुध्दि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूं-कूं से नींद नहीं आ रही है। हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा, 'कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह रांड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ- कंबल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!' हल्कू उठा, गड्ढे में से ज़रा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा। हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, 'पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मन बदल जाता है।' जबरा ने उसके मुंह की ओर प्रेम से छलकती हुई आंखों से देखा। हल्कू, 'आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।' जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुंह के पास अपना मुंह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म सांस लगी। चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भांति उसकी छाती को दबाए हुए था। जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसका सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद मे चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद यह समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उनका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था। सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी से बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भांति ही उछल रहा था।

****

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाक़ी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएंगे तब कहीं सबेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग़ था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग़ में पत्तियों को ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, 'चलकर पत्तियाँ बटोरूं और उन्हें

जलाकर ख़ूब तापूं। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देख तो समझे कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।'

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ़ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा, 'अब तो नहीं रहा जाता जबरू। चलो बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टांठे हो जाएंगे, तो फिर आकर सोएंगें। अभी तो बहुत रात है।'

जबरा ने कूं-कूं करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में ख़ूब अंधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूंदे टप-टप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहंदी के फूलों की ख़ुशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा, 'कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी तो सुगंध आ रही है?'

जबरा को कहीं ज़मीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिंचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग ज़मीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। ज़रा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पांव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उताकर बगल में दबा ली, दोनों पांव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा, 'क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?'

जब्बर ने कूं-कूं करके मानो कहा अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जब्बर ने पूंछ हिलाई।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा न करूंगा।'

जबरा ने उस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा!

मुन्नी से कल न कह देना, नहीं तो लड़ाई करेगी।

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ़ निकल गया। पैरों में ज़रा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा, 'चलो-चलो इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ।' वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

****

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अंधेरा छा गया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाक़ी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर ज़रा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूंककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाज़ें साफ़ कान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज़ चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा, 'नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। १कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!'

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'जबरा, जबरा।'

जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना ज़हर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'लिहो-लिहो! लिहो!'

जबरा फिर भूंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन क़दम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़ डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ़ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म ज़मीन पर वह चादर ओढ़ कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ़ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी,

‘क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।’

हल्कू ने उठकर कहा, ‘क्या तू खेत से होकर आ रही है?’

मुन्नी बोली, ‘हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?’

हल्कू ने बहाना किया, ‘मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ!’

दोनों फिर खेत के डांड़ पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा, ‘अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।’

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा, ‘रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा’

मलयालम अनुवाद

മഞ്ഞുപെയ്യുന്ന രാത്രിയിൽ -ഡോ.ജെ.ജയകൃഷ്ണൻ

“സഹന വന്നിട്ടുണ്ട്.” ഹൽകു തന്റെ ഭാര്യയോടു പറഞ്ഞു: “കൈവശമുള്ള രൂപാ അയാൾക്കു കൊടുക്കാം. എങ്ങനെയെങ്കിലും തടി രക്ഷിക്കണമല്ലോ?”

മുന്നി മുറ്റമടിക്കുകയായിരുന്നു. പുറകോട്ടു തിരിഞ്ഞ് ഭർത്താവിനെ നോക്കി അവൾ പറഞ്ഞു: “മൂന്നു രൂപയല്ലേ ഇരിപ്പുള്ളൂ. അതു കൊടുത്താൽ കമ്പിളി എങ്ങനെ വാങ്ങും? മകരമാസമാ വരാൻ പോകുന്നത്. രാത്രി എങ്ങനെ കഴിച്ചുകൂട്ടും? വിളവെടുപ്പിനു തരാമെന്ന് അയാളോടു പറയ്. ഇപ്പോ ഇല്ലെന്നു പറഞ്ഞാലെന്താ ഹൽകു ഒരു നിമിഷം അനിശ്ചിതാവസ്ഥയിലായി.. മകരം വന്നു തലയിൽ കയറിക്കഴിഞ്ഞു. കമ്പിളിയില്ലാതെ രാത്രി കഴിച്ചുകൂട്ടാനാവില്ല. എന്നാൽ സഹന അതു സമ്മതിക്കുകയുമില്ല. ഭീഷണിപ്പെടുത്തും. ചീത്ത വിളിക്കും. കാലക്കേടുകൊണ്ടു തണുപ്പേറ്റു മരിക്കേണ്ടി വന്നേക്കും. എന്നാലെന്താ കഷ്ടകാലം ഒഴിഞ്ഞു പോകുമല്ലോ. ഇങ്ങനെ ചിന്തിച്ചു ഹൽകു തന്റെ പേരിനെ നിരർത്ഥകമാക്കുന്ന തടിച്ചു വീർത്ത ശരീരവുമായി ഭാര്യയുടെ സമീപത്തേക്കു ചെന്നു. അവളെ അനുനയിപ്പിക്കുന്ന സ്വരത്തിൽ പറഞ്ഞു:” അതങ്ങു കൊടുത്തേക്ക്. അയാളിൽ നിന്നുരക്ഷപ്പെടണ്ടേ. കമ്പിളി വാങ്ങാൻ നമുക്കു മറ്റെന്തെങ്കിലും മാർഗ്ഗം നോക്കാം.

മുന്നി ഭർത്താവിന്റെ സമീപത്തു നിന്ന് അൽപം ദൂരത്തേക്കു മാറി നിന്നു. ക്രോധത്തോടെ അയാളെ നോക്കി പറഞ്ഞു: “മറ്റു മാർഗ്ഗം നോക്കിയതുതന്നെ. എന്താ മാർഗ്ഗം? ഞാനും കേൾക്കട്ടെ. ആരെങ്കിലും ദാനമായി കമ്പിളി തരുമോ? കടം തന്നെ ബാക്കി എത്ര കിടക്കുന്നു. അതു വീട്ടാൻ കഴിഞ്ഞിട്ടു വേണ്ടേ ഞാനൊന്നു ചോദിക്കട്ടെ. നിങ്ങൾക്കു കൃഷി നിർത്തിക്കൂടേ? ചത്തു പണിയെടുത്തിട്ടും കിട്ടുന്നതെല്ലാം കടം വീട്ടാനേയുള്ളൂ. കടം വീട്ടാനായി ഇങ്ങനെ ഒരു ജന്മം? വയറു പിഴയ്ക്കാൻ

കൂലിപ്പണി തന്നെ ശരണം. അങ്ങനെയെങ്കിൽ കൃഷി ഇനി വേണ്ടെന്നുവയ്ക്കുന്നതു തന്നെ നല്ലത്. ഞാൻ പണം തരുമെന്നു കരുതേണ്ട.

ഹൽകു ഉദാസീനഭാവത്തിൽ പറഞ്ഞു."എങ്കിൽ പിന്നെ ചീത്ത കേൾക്കുക തന്നെ.

മുന്നി അസ്വസ്ഥയായി. "എന്തിനാ ചീത്ത വിളിക്കുന്നത്." അയാളാണോ നമ്മുടെ രാജാവ്?

എന്നാൽ ഇതു പറയുമ്പോൾ തന്നെ അവളുടെ വലിഞ്ഞുമുറുകിയ പുരികങ്ങൾ അയഞ്ഞു. ഹൽകുവിന്റെ സ്വരത്തിലെ കഠോരമായ സത്യം ഒരു ദുഷ്ടജന്തുവിനെപ്പോലെ അവളെ തുറിച്ചു നോക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു. മുന്നി ചുമരളയിൽ നിന്ന് രൂപയെടുത്ത് ഹൽകുവിന്റെ കയ്യിൽ വച്ചു കൊടുത്തു. "നിങ്ങൾ ഇന്നുമുതൽ തന്നെ കൃഷി വേണ്ടെന്നു വച്ചോളൂ. കൂലിപണി ചെയ്താൽ ഒരു നേരമെങ്കിലും സുഖമായി ഭക്ഷണം കഴിക്കാം. ആരെയും ഭയക്കുകയും വേണ്ട. നല്ല കൃഷി തന്നെ. പണിയെടുത്തു കിട്ടുന്നതെല്ലാം കടം വീട്ടാൻ മാത്രമോ എത്ര പേരെയാ പേടിക്കേണ്ടത്.

ഹൽകു രൂപയുമായി പുറത്തേക്കു നടന്നു. തന്റെ ഹൃദയം തന്നെ പറിച്ചെടുത്ത് സഹനയ്ക്ക് കൊടുക്കാൻ പോകുന്നതുപോലെ അയാൾ പണിയെടുത്ത് ഓരോ പൈസയായി കൂട്ടി വച്ച് കമ്പിളി വാങ്ങാനായി മൂന്നു രൂപാ സമ്പാദിച്ചു വച്ചതായിരുന്നു. ആ പണമാണ് ഇന്ന് കയ്യിൽ നിന്നു പോകുന്നത്. ഓരോ ചുവടു വയ്ക്കുമ്പോഴും അയാളുടെ ശിരസ്സ് ദീനതയുടെ ഭാരത്താൽ കൂടുതൽ കുനിഞ്ഞു പോകുന്നുണ്ടായിരുന്നു.

****

മകരത്തിലെ തണുത്ത രാത്രി. ആകാശത്ത് നക്ഷത്രങ്ങൾ തണുത്തു മരവിച്ചു നിൽക്കുന്നതുപോലെ തോന്നി. ഹൽകു പാടത്തിന്റെ കരയിൽ കരിമ്പോലകളുടെ കുടയ്ക്കു കീഴിൽ ഒരു പഴയ മുളങ്കട്ടിലിൽ തന്റെ പഴയ പുതപ്പു പുതച്ചു കിടന്നു വിറയ്ക്കുകയായിരുന്നു. കട്ടിലിനു താഴെ അയാളുടെ സന്തതസഹചാരി ജബ്റ ഉദരത്തോടു മുഖം ചേർത്തുവച്ച് തണുപ്പു സഹിക്കാനാവാതെ മുരളുന്നുണ്ടായിരുന്നു. ഹൽകുവിനും ജബ്റയ്ക്കും തണുപ്പു കാരണം ഉറക്കം വന്നില്ല.

ഹൽകു കാൽമുട്ടുകൾക്കിടയിലേയ്ക്കു തല പൂഴ്ത്തിവച്ചുകൊണ്ടു പറഞ്ഞു: "എന്തുപറ്റി ജബ്റ തണുക്കുന്നുണ്ടോ? വീട്ടിൽ വൈക്കോലിന്റെ പുറത്തു കിടക്കാൻ പറഞ്ഞതല്ലേ. എന്നിട്ടും ഇവിടെ എന്തെടുക്കാനാ വന്നത്. ഞാനിവിടെ ഹൽവയും പൂരിയുമൊക്കെ തിന്നാൻ വന്നെന്നാണോ നീ കരുതിയത്? വെറുതെ ഓടി എനിക്കു മുന്നേ എത്തി. ഇനിയിപ്പോ പറ്റിയതോർത്ത് സങ്കടപ്പെടാം.

ജബ്റ താഴെക്കിടന്നു വാലിളക്കി. തന്റെ മുരൾച്ചയെ അൽപം കൂടി ദീർഘമാക്കിക്കൊണ്ട് ഒരു തവണ കോട്ടുവായിട്ട് അവൻ നിശ്ശബ്ദനായി. യജമാനന്റെ ഉറക്കത്തിന് തന്റെ ശബ്ദം വിഘ്നമാകുമെന്ന് അവന്റെ ശ്വാനബുദ്ധി മനസ്സിലാക്കിയതുപോലെ തോന്നി.

ഹൽകു ജബ്റയുടെ തണുത്ത പുറം തലോടിക്കൊണ്ട് പറഞ്ഞു. "നാളെ മുതൽ എന്നോടൊപ്പം വരരുത്. വന്നാൽ തണുപ്പേറ്റു ചത്തു പോകും". പതുക്കെ എഴുന്നേറ്റ് ഒരു ഹുക്ക കൂടി വലിക്കാം. അയാൾ

വിചാരിച്ചു. ഏതു വിധേനയും രാത്രി കഴിച്ചു കൂട്ടണമല്ലോ. എട്ടെണ്ണം വലിച്ചുകഴിഞ്ഞു. ഇതാണു കൃഷിയുടെ സുഖം മറ്റു ചില ദൈവങ്ങളുണ്ട്. അവരുടെ അടുത്തേക്ക് തണുപ്പു ചെന്നാൽ ഉഷ്ണത്തെ ഭയന്ന് ഓടിപ്പോകും. തടിച്ച മെത്തകൾ, കരിമ്പടങ്ങൾ... ശൈത്യകാലം കഴിച്ചുകൂട്ടാൻ ഈ സൗഭാഗ്യങ്ങളൊക്കെ വേണം. തലയിലെഴുത്തിന്റെ വലിപ്പം തന്നെ. അദ്ധ്വാനിക്കാൻ നമ്മളും അനുഭവിക്കാൻ വല്ലവരും.

ഹൽകു എഴുന്നേറ്റ് ഹുക്ക നിറച്ചു. ജബ്റയും എഴുന്നേറ്റിരുന്നു.

ഹൽകു ഒരു പുകയെടുത്തു കൊണ്ടു പറഞ്ഞു: "നിനക്കു വേണോ? തണുപ്പൊന്നും മാറില്ല. എങ്കിലും ഒരു രസത്തിന്

ഹൽകു: "ഇന്നല്പം തണുപ്പ് കൊണ്ടോളൂ. നാളെ ഞാനിവിടെ വൈക്കോൽ വിരിച്ചുതരാം. അതിൽ കിടന്നാൽ തണുപ്പേൽക്കില്ല.

ജബ്റ മുൻകാലുകൾ ഹൽക്കുവിന്റെ കാൽമുട്ടിൽ കയറ്റിവച്ച് അയാളുടെ മുഖത്തേക്കു തന്റെ മുഖം ചേർത്തു. ഹൽക്കുവിനു ചുടുനിശ്വാസം അനുഭവപ്പെട്ടു.

ഹുക്ക വലിച്ച് ഹൽകു കിടന്നു. എന്തു സംഭവിച്ചാലും ഇനി ഉറങ്ങണം എന്നുറപ്പിച്ചാണു കിടന്നത്. എന്നാൽ അടുത്ത നിമിഷം അയാളുടെ മനസ്സിൽ ഒരു വിറയൽ അനുഭവപ്പെട്ടു. ഉറങ്ങാനാവാതെ അങ്ങോട്ടുമിങ്ങോട്ടും തിരിഞ്ഞുകിടന്നു. തണുപ്പ് ഒരു പിശാചിനെപ്പോലെ അയാളുടെ നെഞ്ചിൽ അമർത്തിപ്പിടിച്ചിരുന്നു. ചേർത്തു കിടത്തി ഒരു വിധത്തിലും സഹിക്കാനാവാതായപ്പോൾ അയാൾ പതുക്കെ ജബ്റയെ ഉണർത്തി. അവന്റെ തലയിൽ തഴുകിക്കൊണ്ട് അവനെ തന്റെ മടിയിൽ തന്നെ ഉറക്കി. നായയുടെ ശരീരത്തിൽ നിന്നു ദുർഗന്ധം വമിക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു. എന്നാൽ അവനെ തന്റെ മടിയിലേക്കു ചേർത്തു കിടത്തിക്കൊണ്ട് അയാൾ അത്യപൂർവ്വമായ ഒരു സുഖം അനുഭവിച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു. ഇതാണ് സ്വർഗ്ഗമെന്ന് ജബ്റയ്ക്കും തോന്നിയിട്ടുണ്ടാവും. ഹൽകുവിന്റെ നിഷ്കളങ്കമായ ആത്മാവിൽ ജബ്റയോട് വെറുപ്പിന്റെ ഗന്ധം ഉണ്ടായിരുന്നില്ല. തന്റെ ഉറ്റ സുഹൃത്തിനെ അല്ലെങ്കിൽ സഹോദരനെ മാത്രമേ അയാൾ ഇത്ര ആത്മീയമായി ആലിംഗനം ചെയ്തിട്ടുള്ളു. ഇന്നു തന്നെ ഈ അവസ്ഥയിലെത്തിച്ച തന്റെ ദൈന്യം അപ്പോൾ അയാളെ മുറിവേൽപ്പിച്ചില്ല. അസാധാരണ മായ ഈ മിത്രത അയാളുടെ ആത്മാവിന്റെ എല്ലാ വാതായനങ്ങളെയും തുറന്നിട്ടു. അയാളുടെ ഓരോ അണുവും പ്രകാശത്താൽ തിളങ്ങുന്നുണ്ടായിരുന്നു.

പെട്ടെന്ന് ജബ്റ ഏതോ മൃഗത്തിന്റെ കുളമ്പടി ശബ്ദം തിരിച്ചറിഞ്ഞു. സവിശേഷമായ ഈ ആത്മീയത അവനിൽ ഒരു പുത്തനുണർവ്വ് നിറച്ചിരുന്നു. കാറ്റിന്റെ തണുത്ത പ്രഹരം അവനു നിസ്സാരമായി തോന്നി. ജബ്റ ചാടിയെഴുന്നേറ്റ് പുറത്തേക്കിറങ്ങി വന്ന് ഉച്ചത്തിൽ കുരയ്ക്കാൻ തുടങ്ങി. ഹൽകു നിരവധി തവണ സ്നേഹത്തോടെ അവനെ തിരികെ വിളിച്ചു. പക്ഷേ അവൻ കൂട്ടാക്കിയില്ല. നാലുപാടും ഓടിനടന്നു കുരച്ചുകൊണ്ടേയിരുന്നു. ഒരു പ്രാവശ്യം അയാളുടെ അടുത്തേക്കു വന്നാൽ തന്നെ തൊട്ടടുത്ത നിമിഷം ഉറക്കെ കുറച്ച് പുറത്തേക്ക് ഓടാൻ തുടങ്ങി. കർത്തവ്യബോധം അവന്റെ ഹൃദയത്തിൽ അലയടിച്ചു കൊണ്ടിരുന്നു.

****

ഒരു മണിക്കൂർ കൂടി കടന്നുപോയി. കാറ്റ് വീശിത്തുടങ്ങിയപ്പോൾ ശൈത്യം ഒന്നുകൂടി വർദ്ധിച്ചു. ഹൽകു എഴുന്നേറ്റിരുന്നു. അയാൾ രണ്ടു കാൽമുട്ടുകളും മടക്കി നെഞ്ചോടു ചേർത്തുവച്ച് തല അതിനുള്ളിൽ ഒളിച്ചു വച്ചു. എന്നിട്ടും തണുപ്പ് കുറഞ്ഞില്ല. രക്തം മുഴുവൻ തണുത്തുറഞ്ഞതു പോലെ തോന്നി. ധമനികളിൽ രക്തത്തിനു പകരം മഞ്ഞാണ് ഒഴുകുന്നത്. അയാൾ കുനിഞ്ഞ് ആകാശത്തേക്കു നോക്കി. രാത്രി ഇനി എത ബാക്കിയുണ്ട്? സപ്തർഷികൾ ആകാശത്തിൽ പകുതി പോലും കടന്നിട്ടില്ല. അവ മുകളിലെത്തുമ്പോഴേ പ്രഭാതമാകൂ. രാത്രി ഇനി ഒരു യാമത്തിലും ഏറെയുണ്ട്.

ഹൽകുവിന്റെ വയലിൽ നിന്ന് അൽപമകലെ ഒരു മാന്തോപ്പുണ്ടായിരുന്നു. ഇല പൊഴിച്ചിൽ തുടങ്ങിയിരുന്നു. തോട്ടത്തിൽ കുന്നോളം ഇലകൾ വീണുകിടപ്പുണ്ടായിരുന്നു. ഇലകൾ കൂട്ടി തീ കായാമെന്ന് അയാൾ വിചാരിച്ചു. രാത്രിയിൽ താൻ ഇലകൾ കൂട്ടുന്നത് ആരെങ്കിലും കണ്ടാൽ ഭൂതമാണെന്നു വിചാരിച്ചു കൊള്ളും. അവിടെ ഏതെങ്കിലും മൃഗം ഒളിച്ചിരിപ്പുണ്ടോ എന്നുതന്നെ ആർക്കറിയാം. എന്നാൽ ഇവിടിനി ഇങ്ങനെ ഇരിക്കാനും വയ്യ.

അയാൾ അടുത്തുള്ള തുവരപ്പാടത്തേക്കിറങ്ങി കുറേ ചെടികൾ പിഴുതെടുത്തു. അതുകൊണ്ട് ഒരു ചൂലുണ്ടാക്കി. കയ്യിൽ പുകയുന്ന ചാണക വറളിയുമായി തോട്ടത്തിലേക്കു നടന്നു. അയാളെ കണ്ട് ജബ്റ അടുത്തു വന്നു വാലാട്ടാൻ തുടങ്ങി.

ഹൽകു പറഞ്ഞു: “സഹിക്കാനാവുന്നില്ല. നീയും വരുന്നോ. നമുക്കു തോട്ടത്തിലെ ഇലകൾ കൂട്ടി തീ കായാം. തണുപ്പ് ലേശം മാറുമ്പോ വന്നുകിടന്ന് ഉറങ്ങാം. രാത്രി ഇനിയും ഏറെയുണ്ട്.

ജബ്റ നേരിയ ശബ്ദമുണ്ടാക്കി സമ്മതം പ്രകടിപ്പിച്ചു. അവൻ യജമാനനു മുമ്പേ തോട്ടത്തിലേക്കു നടന്നു.

ജബ്റയ്ക്ക് എവിടുന്നോ ഒരു എല്ലിൻ കഷണം കിട്ടിയിരുന്നു. അവൻ അതു കടിച്ചീമ്പുകയായിരുന്നു

ഹൽകു തീയ് താഴെ വച്ച് ഇലകൾ കൂട്ടാൻ തുടങ്ങി. അല്പനേരത്തിനുള്ളിൽ ഇലകൾ ഒരു കൂനയോളമായി. അയാളുടെ കൈകൾ വിറയ്ക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു. നഗ്നമായ പാദങ്ങൾ മഞ്ഞുപോലെ അലിയുന്നുണ്ടായിരുന്നു. എന്നിട്ടും അയാൾ ഇലകളുടെ ഒരു പർവ്വതം തന്നെ രൂപപ്പെടുത്തുകയാണ്. ഈ രീതിയിൽ അയാൾ തണുപ്പിനെ കത്തിച്ചു ഭസ്മമാക്കും. അല്പസമയത്തിനുള്ളിൽ തീ ആളിക്കത്തി. അതിന്റെ ജ്വാല വൃക്ഷങ്ങളുടെ ശിഖരങ്ങളിൽ സ്പർശിച്ചു. ആ പ്രകാശത്തിൽ മാന്തോപ്പിലെ വിശാല മായ വൃക്ഷങ്ങൾ അന്ധകാരത്തെ ശിരസ്സിലേറ്റി നിൽക്കുന്നതു പോലെ തോന്നി. അന്ധകാരത്തിന്റെ അനന്തസാഗരത്തിൽ പ്രകാശം ഒരു നൗകയെപ്പോലെ ആടിയുലഞ്ഞു കൊണ്ടിരുന്നു.

ഹൽകു അഗ്നിക്കടുത്തിരുന്ന് ശരീരം ചൂടുപിടിപ്പിക്കുകയായിരുന്നു. അയാൾ പുതപ്പഴിച്ച് ഒരു വശത്തേക്കു മാറ്റിവച്ചു. രണ്ടു കാലുകളും നിവർത്തി വച്ചു. അയാൾ തണുപ്പിനെ വെല്ലുവിളിക്കുന്നതുപോലെ തോന്നി. തണുപ്പിന്റെ അസാധാരണ ശക്തിക്കുമേൽ താൻ നേടിയ വിജയത്തെ അയാൾ മനസ്സിൽ മൂടിവെയ്ക്കാനായില്ല.

അയാൾ ജബ്റയോടു പറഞ്ഞു: "ഇപ്പോ നിനക്കു തണുക്കുന്നില്ലല്ലോ. ജബ്റ പതുക്കെ മുരണ്ടു. ഇപ്പോൾ തണുപ്പില്ലെന്നു പറയുന്നതു പോലെ.

"നേരത്തേ ഈ ബുദ്ധി തോന്നിയില്ലല്ലോ. എങ്കിൽ ഇത്രയ്ക്ക് തണുപ്പേൽക്കേണ്ടി വരില്ലായിരുന്നു".

ജബ്റ വാലിളക്കി.

"ഈ തീയ്ക്ക് മുകളിലൂടെ ചാടിക്കടക്കാമോ? ആർക്കാ പറ്റുന്നതെന്നു നോക്കാം. പിന്നെ ഒരു കാര്യം. പൊള്ളാതെ നോക്കണം. ഞാൻ മരുന്ന് വച്ച് തരുമെന്നു കരുതണ്ട.

ജബ്റ ആ അഗ്നിരാശിയെ കാതരമായ മിഴികളോടെ നോക്കി.

"മുന്നിയോട് ഇക്കാര്യം പറയണ്ട. ഇതറിഞ്ഞാൽ അവൾക്കു ശണ്ഠയ്ക്ക് വകയാവും".

അയാൾ തീയ്ക്കു മുകളിലൂടെ കഷ്ടിച്ച് ചാടിക്കടന്നു. തീജ്വാല കാലുകളെ മെല്ലെയൊന്നു തൊട്ടു. പക്ഷേ അതു കാര്യമാക്കാനുണ്ടായിരുന്നില്ല. ജബ്റ തീയ്ക്ക് ഒരു വലം വച്ച് ഹൽകുവിന്റെ അടുത്തു വന്നു നിന്നു.

ഹൽകു പറഞ്ഞു: "ഏയ്. ഇതു പറ്റില്ല. ഒന്നു ചാടി നോക്ക്." അയാൾ ഒരു തവണ കൂടി ഭദ്രമായി തീക്കൂന ചാടിക്കടന്നു.

****

ഇലകൾ കത്തിയമർന്നു. തോട്ടത്തിൽ വീണ്ടും കൂരിരുൾ പരന്നു. ചാരത്തിനടിയിൽ അവശേഷിച്ച തീയ് കാറ്റ് വീശുമ്പോൾ കണ്ണു മിഴിക്കുകയും തൊട്ടടുത്ത നിമിഷത്തിൽ കണ്ണടച്ചു കെട്ടുപോകുകയും ചെയ്തു.

ഹൽകു വീണ്ടും പുതപ്പെടുത്തു പുതച്ചു. അയാൾ ചൂടുചാരത്തിനടുത്തിരുന്ന് ഒരു മൂളിപ്പാട്ട് പാടാൻ തുടങ്ങി. ശൈത്യം അധികരിക്കുന്നതനു സരിച്ച് ആലസ്യം അയാളെ നിഷ്ക്രിയനാക്കി.

പൊടുന്നനെ ജബ്റ ഉറക്കെ കുരച്ചുകൊണ്ടു പാടത്തേക്ക് ഓടി. മൃഗങ്ങളുടെ ഒരു കൂട്ടം തന്നെ വയലിലിറങ്ങിയതായി അയാൾക്കു തോന്നി. ചിലപ്പോൾ മാൻകൂട്ടമായിരിക്കും. അവ കുതിച്ചുമറിയുന്ന ശബ്ദം കാതുകളിൽ വന്നലയ്ക്കുന്നു.

അയാൾ മനസ്സിൽ പറഞ്ഞു: ഏയ്, അങ്ങനെ വരില്ല. ജബ്റയുള്ളപ്പോൾ ഒരു മൃഗത്തിനും പാടത്തിറങ്ങാൻ പറ്റില്ല. അവൻ ശരിപ്പെടുത്തിക്കളയും. എനിക്കു തോന്നുന്നതാണ്.

ഇപ്പോൾ ഒച്ചയൊന്നും കേൾക്കുന്നില്ലല്ലോ. ഒക്കെ എന്റെ തെറ്റിദ്ധാരണ തന്നെ.

അയാൾ ഉറക്കെ വിളിച്ചു: ജബ്റ.......ജബ്റ

ജബ്റ കുരച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു അവൻ അയാളുടെ അടുത്തേക്കു വരാൻ കൂട്ടാക്കിയില്ല.

വീണ്ടും മൃഗങ്ങൾ മേയുന്ന ശബ്ദം കേട്ടു. ഇത്തവണ അയാൾക്കു തന്നെ ചതിക്കാനായില്ല. എന്നാൽ അയാൾക്ക് ഇരുന്നിടത്തുനിന്ന് ഇള

കാനും കഴിഞ്ഞില്ല. അത്രത്തോളം ഉറച്ചുപോയിട്ടുണ്ട്. ഈ കോച്ചുന്ന തണുപ്പിൽ പാടത്തേക്കു പോകുന്നതും മൃഗങ്ങൾക്കു പിന്നാലെ ഓടുന്നതും അസാധ്യം തന്നെ. ഹൽകു ഇരുന്നിടത്തു നിന്ന് അനങ്ങിയതേയില്ല.

അയാൾ വീണ്ടും ഒച്ചയെടുത്തു. ജബ്റ അപ്പോഴും കുരയ്ക്കുകയാണ്. മൃഗങ്ങൾ വയലിൽ മേഞ്ഞു നടക്കുന്നു. പാടം വിളവെടുപ്പിനു തയ്യാറായി നിൽക്കുകയായിരുന്നു. എന്നാൽ ഈ ദുഷ്ടമൃഗങ്ങൾ ഒക്കെ നശിപ്പിക്കുകയാണ്.

ഹൽകു ഒരു ദൃഢനിശ്ചയമെടുത്ത് അവിടെനിന്ന് എഴുന്നേറ്റു. രണ്ടു മൂന്നു ചുവടുകൾ വെച്ചതാണ്. അപ്പോഴേക്കും കാറ്റ് സൂചിമുനകൾ കൊണ്ട് തണുപ്പിനെ അയാളുടെ ശരീരത്തിൽ കുത്തിനിറയ്ക്കാൻ തുടങ്ങി. ശരീരമാസകലം തേൾ കുത്തുന്നതുപോലെ തോന്നി. അയാൾ വീണ്ടും കെട്ടു പോയ തീയ്ക്ക് സമീപം വന്നിരുന്നു. വെണ്ണീർ മാന്തി അയാൾ തണുത്ത ദേഹത്തെ ചൂടു പിടിപ്പിക്കാൻ നോക്കി.

ജബ്റ അപ്പോഴും തൊണ്ട കീറുകയാണ്. മൃഗങ്ങൾ വയൽ വെടിപ്പാക്കിക്കഴിഞ്ഞു. ഹൽകു ചൂടുചാരത്തിനടുത്ത് ശാന്തനായി ഇരുന്നു. ആലസ്യത്തിന്റെ ചരടുകളാൽ അയാൾ കെട്ടിവരിയപ്പെട്ടിരുന്നു.

ചാരത്തിനടുത്ത് ചൂടുതറയിൽ അയാൾ പുതപ്പ് മൂടിക്കിടന്ന് ഉറങ്ങി. വെയിൽ പരന്നുകഴിഞ്ഞപ്പോഴാണ് ഉറക്കമുണർന്നത്. അപ്പോൾ മുന്നി അടുത്തുണ്ടായിരുന്നു. “ഇന്നു മുഴുവനും ഇങ്ങനെ ഉറങ്ങാമെന്നാണോ. നിങ്ങൾ ഇവിടെ കിടന്ന് സുഖമായി ഉറങ്ങിക്കോ. വിളവു മൊത്തം നശിച്ചതുകണ്ടോ.

ഹൽകു എഴുന്നേറ്റു. “നീ പാടത്തു പോയിട്ടാണോ വന്നത്?” അതേ. “മുന്നി പറഞ്ഞു: “പാടം മുഴുവൻ നശിച്ചു. കൊള്ളാം ഇങ്ങനെ ആരെങ്കിലും ഉറങ്ങുമോ? പാടത്തു കുടിൽ കെട്ടിയിട്ട് എന്തു ചേതം. ഹൽകു ഒരു അസത്യം പറഞ്ഞു ഫലിപ്പിക്കാൻ നോക്കി. “ഞാൻ മരണത്തിൽ നിന്നും എങ്ങനെയെങ്കിലും രക്ഷപ്പെട്ടതാ. അപ്പോഴാ നിനക്കു വയലിന്റെ ചിന്ത. ഇന്നലെ രാത്രി എനിക്കു വന്ന വയറുവേദന. ഹൊ അത് എനിക്കേ അറിയൂ”.

രണ്ടുപേരും വീണ്ടും വയലിലേക്കു വന്നു. വയൽ മുഴുവൻ ചവിട്ടി മെതിച്ചിരിക്കുന്നു. ജബ്റ കുടിലിനു താഴെ ചേതനയറ്റ പോലെ കിടക്കുന്നുണ്ട്. ഹൽകുവും മുന്നിയും വയൽ ചുറ്റി നടന്നുകണ്ടു. മുന്നിയുടെ മുഖം ശോകാർദ്രമായിരുന്നു. എന്നാൽ ഹൽകു പ്രസന്നവദനനായി കാണപ്പെട്ടു. മുന്നി ചിന്താഗ്രസ്തയായി. “ഇനിയിപ്പോ പാട്ടം കൊടുക്കാൻ എന്തെങ്കിലും കൂലിപ്പണി നോക്കണം.” എന്നാലും രാത്രിയിൽ ഇവിടെ കിടന്ന് തണുത്തു വിറയ്ക്കേണ്ടല്ലോ”. പ്രസന്നഭാവത്തിൽ പറഞ്ഞു.

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिम्ब होते है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमी से सम्बद्ध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमी से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिम्ब नहीं उभार सकता।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. किसी एक हिन्दी कहानी का मलयालम में अनुवाद कीजिए।
2. किसी एक अंग्रेज़ी कविता का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
3. किसी एक मलयालम कहानी का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
4. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद करते समय अनुवादक को किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए। टिप्पणी लिखिए।
   - अनुवाद पर टिप्पणी और मूल्यांकन करना आवश्यक है।
   - अनुवाद करते समय उपस्थित समस्याओं पर भी प्रकाश डालिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अनुवाद अभ्यास 3 और 4 - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
2. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
3. अनुवाद कला: कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद कुछ नमुने कुछ पैमाने - डॉ. आरसु
2. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

Course Code: M23HD01AC

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-966907-1-7

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841